विषय-सूची

ॐ

श्री सच्चिदानन्दाय नमः

ज्ञान-वैराग्य-प्रकाश

वेदान्त शास्त्र

प्रारम्भः

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम् ।
भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

श्लोक

ओ३म् ब्रह्म प्रणम्य प्रणम्य, गुरु, पुनि प्रणम्य सब सन्त ।
करत मंगलाचरण इह, नाशत विघन अनन्त ॥
ध्यानमूलं गुरोः मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोः वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥

दोहा

प्रथम गणपति सुमरता, दीज्यो बुद्धि और ज्ञान ।
अनन्त करोड़ देवी देवता, धरें तुम्हारा ध्यान ॥
जय जय श्री गणपति जय जय श्री गुरुदेव ।
जय जय श्री पारब्रह्म दे अनुभव का भेव ॥
मत अरु पन्थ अनेक है, जिनको मेरा प्रणाम ।
मानव कल्याण के लिये 'राम जन' हुआ निर्माण ॥

श्लोक

गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णुः गुरुः साक्षान्महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

आरती

ओ३म् जय सत गुरु देवा, स्वामी जय सत गुरु देवा ।
सुर नर मुनि जन ध्यावें, स्वामी करत नित सेवा ॥१
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, गुरु शंकर देवा ।
गुरु नारद गुरु शारद, गुरु गोरख देवा ॥२
गुरु [illegible] गुरु कपिल, गुरु व्यास मुनि देवा ।
गुरु मंगल गुरु कृष्ण, गुरु सुरपति देवा ॥३
गुरु अगम ब्रह्म तप धारी, गुरु वशिष्ठ मुनि देवा ।
गुरु वेद स्मृति गीता, गुरु नानक देवा ॥४
गुरु कबीर सत साहिब, गुरु दादू जन देवा ।
गुरु रविदास परमहंस, गुरु देवन के देवा ॥५
गुरु जनों की आरती, करे नित कोई सेवा ।
'ओंकाराम' आरती गावे, मन वांछित फल देवा ॥६

भजन राग पुर्बोयुक्त चार

भज मन देव गणेश सदा, निज अनुभव ज्ञान बतावत है ॥टेक
गणपति सुमर सदा सुख पावे, विद्या बुद्धि बल पावत है ॥१
गणपति देव देवों का राजा, गीता ग्रन्थ सुनावत है ॥२
जिन पर कृपा करे निज स्वामी, ज्ञान सुधा बर्षावत है ॥३
'ओंकाराम' कृपा सत गुरु की, चरण कमल चित लावत है ॥४

दोहा

गुरु है पारब्रह्म परमात्मा, गुरु है अलख गुसांई ।
गुरु गति मुक्ति का दाता, गुरु बिन दूजा नाई ॥

भजन राग लावणी

अब तुम दया करो गुरु देव जी, चौरासी मिटाने वाले ॥टेक
प्रथम नारद मुनि शरणे आये, उन्हें धीमर सत गुरु पाये जी ।
सच्ची बुद्धि बताने वाले ॥१

[illegible] गुरु [illegible] पाया, उनका [illegible] की ।
यम [illegible] काटने वाले ॥२
राजा जनक राम गुरु पाये, तब शुक देव सिद्ध कहलाये जी ।
सत पन्थ बताने वाले ॥३
भजनानन्द गुरु पाया, कहे 'ओंकाराम' गुण गाया जी ।
गुरु मुक्ति के दिलाने वाले ॥४

दोहा

गुरु समान दाता नहीं, याचक सिष्य समान ।
तीन लोक की सम्पदा, सो गुरु दीनी दान ॥
तीर्थ नहाये एक फल, सन्त मिले फल चार ।
सतगुर मिले अनेक फल, कहे कबीर विचार ॥

भजन राग ध्रुपद

गुरु के समान दाता नहीं, सब जुग मंगल हारा रे ॥टेर
सप्त द्वीप नौ खण्ड में, सब जुग में विस्तारा ।
क्या राजा क्या बादशाह, सब ने हाथ पसारा रे ॥१
कागज की नाव बनाय के, बिच में लोहा डारा ।
सतगुर पार उतार सी, पापी डूबे मझधारा रे ॥२
पत्थर ने पूजत फिरे, क्या पूजत पाया ।
अड़सठ का फल एक है, द्वारे सन्त जिमाया रे ॥३
अपराधी तीरथ चला, क्या तीरथ नहाया ।
कपट दाग धोया नहीं, कोरा अंग नहाया रे ॥४
अन्धा नं सूझत नहीं, क्या ढूंढत पाया ।
कहे 'कबीरा' धर्मीदास ने, गुरु से होय निस्तारा रे ॥५
दोहा—मात पिता मिल जायंगे, लख चोरासी मायं ।
गुरु सेवा और बन्दगी, फेर मिलन की नायं ॥

भजन राग लावणी

मन सतगुरु शरणों आय, नाम नित भजना, नाम नित भजना ॥
मन जगत जंजाल बुहार, फिर रस तजना ।।टेक
मन मात पिता परिवार, नार सुख सहना ।
मन घर मन्दिर महलात, कोई सब ढहना ॥१
मन माया को तुम मान, फूल क्यूं फिरना ।
मन होय दिनों के मान, अन्त तुने मरना ॥२
मन माया मुकाम सराय, जिसमें नहीं रहना ।
मन अपना करो विचार, मान ले कहना ॥३
मन चौदह भवन पर काल, जासे नित डरना ।
कहे 'भोलाराम' ब्रह्मानंदो, लेवे गुरु का शरना ॥४

दोहा

सन्त समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ होय ।
सुत दारा और लक्ष्मी, पापी के भी होय ॥
सत संगत में बैठ कर, हो जावो भव पार ।
खेवटिया सत गुरु सही, छिण में लगावे पार ॥
श्वास-श्वास पे नाम ले, वृथा श्वास मत खोय
ना जाने इस श्वास का, आवन होय न होय ॥

सवैया

दूर है राम नजदीक है राम देस है राम प्रदेसु है रामे ।
पूर्व राम हो पश्चिम राम ही दक्षिण राम है उत्तर धामे ॥
आगे है राम ही पीछे है राम ही व्यापक राम वनहु ग्रामे ।
'सुन्दर' राम दसों दिस पूरण स्वर्ग है राम पाताल है तामे ॥

दोहा

घट-घट रहा बिराज, मुख से बोलो राम ।
रोम-रोम में बस रहा, नहीं और से काम ॥

जयपुर से पश्चिम दिशा, दिल्ली पुरी दरम्यान ।
फागी नगर के वासी है लेखक 'जीवन राम' ॥

दोहा

बड़ा लाभ गुरु लेय के, सत गुरु दिया छिटकाय ।
तुलसी ऐसा शिष्य जो, निश्चय नरक में जाय ॥

कुण्डली

नरजी चेला गुरु से गुन लेकर भग जाय ।
कृतघ्नता के दोष से, जग में धक्का खाय ॥
जग में धक्का खाय, मान दुनिया से जावे ।
भोगे कष्ट अपार, कष्ट फल निश्चय पावे ॥
'रामलाल' ऐसे शिष्य को मतना मुंह लगाय ।
नरजी चेला गुरु से गुण लेकर भग जाय ॥

दोहा

पतिव्रता को सुख घणा, जिसके पती है एक ।
व्यभिचारिनि को सुख कहां, जिसके पती अनेक ॥

भजन राग पारवा

जिस घर में करकसा नारी, वो सदा दुःख से भारी ॥टेक
पति धर्म को वो नहीं जाने, भली-बुरी वो नहीं पहचाने ।
कहा किसी का वो नहीं माने, वो झगड़ा करती नार ॥
वो अन्त नरक अधिकारी ॥१
प्रेम भाव से बातें न करती, जण-जण से वो लड़ती फिरती ।
सासु-सुसर देवर से अड़ती, वो है कलह करणी नार ॥
वो चले कुटुम्ब से न्यारी ॥२
सोवे तब तो नाक ठहरावे, सुपने मायं बहुत बरड़ावे ।
खावे मरोड़ा बहुत लगावे, नर तू ऐसी नार को ॥
तेरी उमर बिपत में जा रही ॥३

दोहा

पांच तत्व गुण तीन हैं पच्चीस प्रकृति जान ।
दस इन्द्री पांचों तत्व की, पांच कर्म पांच ज्ञान ॥
पांच तत्व के महल में जो तत्व का है भौर ।
जो तत्व के ऊपर सुन्न शिखर कर गौर ॥
दया करी गुरुदेव ने, काट सकल कलेश ।
बांह पकड़ कर ले गये पारब्रह्म के देश ॥
सतगुरु 'जीवनराम', जो सांचा दिया उपदेश ।
शरण गुरु की जब लई मिट गये सभी कलेश ॥
भजन वाणी और वार्ता, कथ के रचे ग्रंथ ।
पढ़ने से कल्याण हो कहता, 'राम जन' पंथ ॥

भजन राग गजल

सत गुरु चरणों का दास बनाले मुझे ।
यम दुनियां में देने न जीने मुझे ॥टेक
भव सिंधु के बीच में मैं घणा दुख पा रहा ।
काम क्रोध कछ मछ को देख कर डर रहा ॥
सतगुरु भव से ए पार लगा दे मुझे ॥१
कैसे उतरूं पार मैं किश्ती नाव है नहीं ।
सत्संग जहाज में बिठाने खेवटिया सतगुरु सही ॥
सतगुरु बांह पकड़ कर बिठाले मुझे ॥२
सतगुरु भरोसे जहाज में परिवार ले संग बैठिया ।
विश्वास है गुरु का मुझे इस भवते पार लगायगा ॥
सतगुरु अपने ही देश में बुला ले मुझे ॥३
जीवनराम सतगुरु सही जीने मुझे चिता दिया ।
'कुन्दू' को निर्बल जानकर भवसे पार लगा दिया ॥
सतगुरु अपने ही धाम बसा ले मुझे ॥४

दोहा

मन जीतो हरि चरन में साधु संत समझाय ।
जिसने मन बस में किया, स्वर्ग में आनन्द पाय ॥
एक बैरी मन जानना, दूजा भूला शैतान ।
तीजे बैरी निंदा, नहीं भजन दे राम ॥
चौथे बैरी मान है दे राम सदा अपमान ।
पांचवो बैरी रही मेरा तोते मन ईमान ॥
छठे जो बैरी काल है मेरे सिरपर खड़ा है आन ।
काल के हाथ कमान है ये बूढ़ा गिने न जवान ॥

भजन राग आसावरी

मन रे, करले भजन हरी का ।
करना है सो करले बन्दे सौदा बराबरी का ॥टेक
मन है राजा मन है प्रजा, जय है बजोर नगरी का ।
इनके फन्दे में जो फंस गया, भूला राह डगरी का ॥१
मोह माया के बंधा बन्धन में, माने वचन स्त्री का ।
वे क्या तेरा जीव बचावे, चढ़े हुक्म दिखी का ॥२
मनको मोड़ जोड़ हरिचरनों जाना है अमरपुरी का ।
मन ही हार मन ही से जीत तकुल पे बराबरी का ॥३
जीवन राम गुरु संत बतावे, हृदय मार्ग धरी का ।
'कुन्दूराम' समझ मन मेरा, कहता वचन खरी का ॥४

दोहा

कलिकाल के मनुष्य को, चर्चा कहूँ समझाय,
सच्चे को झूठा करे, झूठे को सच्चा ठहराय ॥
यह कलयुग आयो चामें, साधू न माने कोय ।
कामी क्रोधी मसखरा, तीन की पूजा होय ॥

दोहा

कँवला कुटुम परिवार में, भूल्यो सिरजनहार ।
अन्त समय कोई काम न आवे, जमड़ा मारे मार ॥

भजन राग धारवा

सत्संग बड़ा संसार में कोई बड़ भागी ने पाया ॥टेक
संगत से सुधरे वाल्मीकी जग की प्रीति लगी सब फीकी ।
रामायण रच दीनी नीकी, साठ सहस्र विस्तार में ॥
निर्भय हो हरि गुण गाया ॥१
पूर्व जन्म नारद ऋषिराई, दासी पुत्र थे सेवा ठाई ।
सत्संगत से विद्या पाई, लाये ब्रह्म विचार में ॥
फिर जन्म ब्रह्म घर पाया ॥२
घट से प्रगट अगस्त मुनि ज्ञानी, सत्संगति की महिमा जानी ।
तीन चुल्लू सागर पानी, पिया एक ही बार में ॥
सो सुयश जगत में छाया ॥३
सन्तों की संगत नित करिये, हरदम ध्यान हरी का धरिये ।
'रवीदत्त' कुकर्म से डरिये, दिन बीते जायं करार में ॥
सिर काल वली मँडराया ॥४

भजन राग चलत सोरठ

मनवा नाम बिचारी रे ।
थारी म्हारी करता उमर बीती सारी रे ॥टेर
गर्भवास में रक्षा कीन्ही सदा बिहारी रे ।
बाहर भेजो नाथ भक्ती करस्यूं थारी रे ॥१
बालपणा में लाड़ लड़ायो माता थारी रे ।
तरुण भयो जब लागन लागी तिरिया प्यारी रे ॥२
पाछे सूं माया से लिपट्यो जुड़े हजारी रे ।
कौड़ी कौड़ी खातिर लेवे राड़ उधारी रे ॥३

जो कोई बोले बात ज्ञान की लागे खारी रे ।
जो कोई बोले भजन करो तो देवे गारी रे ॥४
वृद्ध भयो जब कहन लगी यूं घर की नारी रे ।
कबली मरसी डोकरो पूरे गेल हमारी रे ॥५
कफ गला कंठ रूंधं दरवाजा बंद गई प्यारी रे ।
यूं जी थी सो भई बिरानी हुयो भिखारी रे ॥६
कानूरामजी सीख दई सो लागी खारी रे ।
अब चौरासी भुगतो कष्टा करसो भारी रे ॥७
पाछे तो मन सोच करयो कुछ बने न हमारी रे ।
पार लगाओ नाथ 'धानू' शरण तुम्हारी रे ॥८

भजन राग सोरठ

मनवाँ तू दुख पासी रे ।
क्यों बिसरायो हरिनाम आगे के ले जासी रे ॥टेर
कुटुम कबीलो सुख सम्पति धन यहीं रह जासी रे ।
निकल जायगा हंसा काया काम न आसी रे ॥१
दान पुण्य कर लेसी तो जग भलो बतासी रे ।
घोर नरक में जाय भजन बिन मुक्ति न पासी रे ॥२
आगे पूछे धर्मराय जब के बतलासी रे ।
पड़सी मुग्दर मार जाय कर कौन छुड़ासी रे ॥३
सतगुरु कानूराम कृपा कर ज्ञान बतासी रे ।
हीन ज्ञान 'धानू' ने साहब पार लगासी रे ॥४

भजन

कैसे सोय रहे गफलत में, जागो भारत के नर नार ॥टेक
भव धन्धों में फंसे राम को दीन्हों नाम बिसार ।
कोई न आवे काम समझ लो, सब झूठा संसार ॥१

अन्त समय का टोटा करलो क्या रहे सोच विचार ।
राम नाम को जपो आपका होगा बेड़ा पार ।
जो तेरा ये मेरा कहता है सब ही बेकार ।
बिना प्रभु के भजन आपका होय नहीं उद्धार ।
करलो प्यारे याद गर्भ में क्या कर चुके करार ।
चेत करो हरि भजो कहे कव 'छीतर' जीवन सार

भजन राग आसावरी

सार पंथ निरख पद मोरा, सन्त महात्मा करिय
हरिजन बिना निवण, कुण तरिया ।।टेक
मूल कमल दिल चार चौकी, गणपति आसन करिया
आसन मार अडग हो बैठा, ध्यान उनों का ही धरिया
नमो-नमो म्हारी मात पिता ने, उत पुत पालन करिया
नमो-नमो म्हारी धरती माताने, जिनके ऊपर फिरिया
नमो-नमो म्हारा आद गुरु ने, नाम नाभि बिच धरिया
नमो नमो म्हारा भायांकी संगत ने, तामें बैठ सुधरिया
नमो नमो म्हारा पूर्ण ब्रह्म ने, हो अन्दर ओलरिया
ऊंच नीच में बराबर भरिया, तां का सुमरण करिया
भरम्या ज्यां का भर्मभय भाग्या, खाली खड़बड़ करिया
मेला हुवा, बराबर हुवा, काल जाल से टलिया
बिना पाल भवसागर भरिया, कोई डूबा कोई तरिया
गुरु खिवण वणे 'माली लखमो' प्रेम पियाला फिरिया

भजन

राम रट लागी-लागी अब कैसे छूटे ।।टेक
प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानि
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चन्द चकोर
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोत जरे दिन रात

प्रभुजी तुम मोती हम धागा, जैसे सोने ही मिलत सुहागा ।।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करे 'रैदासा' ।।

भजन

सांची प्रीत हम तुम संग जोड़ी, तुम संग जोड़ी औरसंगतोड़ी ।।
जो तुम बादर तो हम मोरा जो तुम चन्द हम भए चकोरा ।।१
जो तुम दीपक हम है बाती जो तुम तीरथ तो हम जाती ।।२
जहां-जहां जाऊं तहां तुमरी सेवा, तुम सी ठाकुर और न देवा ।।३
तुमरे भजन से कटे यम फांसा, भक्ति हेतु गावे 'रैदासा' ।।४

भजन

मैं शरणों में तेरे आन पड़ा, कब दया करोगे हे भगवन् ।।टेर
तुम तो हो मेरे दयालु पिता, करुणा के सागर हे स्वामी ।
मैं महा नीच हूँ दास तेरा, कब दया करोगे हे भगवन् ।।१
पापी पतितों पर सदा दया, करते हो लोग यही कहते हैं ।
मैं भी तो पापी पतित खड़ा, कब दया करोगे हे भगवन् ।।२
जब मुझे सहारा और नहीं, तो कैसे छोड़ूं द्वार तेरा ।
मैं खोटा हूं या खरा तेरा, कब दया करोगे हे भगवन् ।।३
तुम मार भी देते हो पल में, और तार भी देते हो पल में ।
विष अमृत का भंडार भरा, कब दया करोगे हे भगवन् ।।४
है दास 'रमन' की यह विनती, अपनालो नाथ दया करके ।
तुम टारो तो नहीं जाऊं टरा, कब दया करोगे हे भगवन् ।।५

दोहा

राम नाम निज सार है, सब सारन में सार ।
कोटी कला प्रकाश पूर्ण, ऐसा सकल संसार ।।

सवैया

अष्ट कमल दिल मेल साहिब हरदम खेल अनूप है ।
रहता रमता आप साहिब ना छाया ना धूप है ।।

नाभि कमल स्थान जांका पुरी तत्व निज धाम है ।
चल हंसा उस धाम पर लो बाह् बड़का ऐसा गाम है ॥
गगन मण्डल मस्तान मेवी सोहंग रूप अपार है ।
'नेकीराम' उस धाम पर पावै अलख का दीदार है ॥

भजन

जागिये गोपाल लाल जननी बलि जाई ॥टेक
उठो तात भयो प्रात रजनी को तिमिर गयो ।
खेलत सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई ॥१
उठो मेरे आनन्द कन्द किरण चन्द मंद मंद ।
प्रकटियो आकाश भानु कमलन सुखदाई ॥२
सखो सब पूरत बेनु तुम बिना न छुटे धेनु ।
उठो लाल तजो सेज सुन्दर रघुराई ॥३
मुख ते पट दूर कियो, यशुदा को दर्श दियो ।
माखन दधि मांग लियो, विविध रस मिठाई ॥४
जेंमत दोऊ राम श्याम सकल मंगल गुण निधान ।
झुठनि रहि थार में सो 'मानदास' पाई ॥५

भजन

राम भज गुजरिया ऐसा दही बिलोर ॥टेर
मनकर मटकी तनकर मथनियां घाले प्रेम की डोर ॥१
राम नाम का माखन काढ़ ले छाछ छाछ दे छोड़ ॥२
यह बेला तेरे हाथ न आवे खरचेगी लाख करोड़ ॥३
'धुन्नीदास' बड़ भागन गुजरी, साध संगत नहीं छोड़ ॥४

भजन

शंकर, मैं आधीन तुम्हारा ॥टेर
गोरे गौर तन पर भस्म बिराजे और सोहे रुण्ड माला ।
बैल चढ़े शिव नाद बजावे, पारबती का प्यारा ॥१

सेवा कर भागीरथ गंग लायो, बहे जटा शिव धारा ।
कई कई पापी पार उतर गये, मेरा करो निस्तारा ॥२
आक धतूरा भोग लगत है, शिव का करत अहारा ।
नील कंठ पर नाग बिराजे, ऐसे दीन दयाला ॥३
भोले नाथ मोपे कृपा कीजे, मैं हूँ दास तुम्हारा ।
'तानसेन' हरि का गुण गावे मेरा करो उपकारा ॥४

भजन

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ॥टेक
क्रोध न छोड़ा झूंठ न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ।
झूंठे जग में दिल ललचा कर, असल वचन क्यों छोड़ दिया ॥
जिहों सुमरिन ते अति सुख पावे, सो सुमरिन क्यों छोड़ दिया ।
'खलिक' इक भगवान् भरोसे, तन धन क्यों न छोड़ दिया ॥

भजन प्रभाती

भोर भयो पक्षी गण बोले, उठो अब हरिगुण गावो रे ॥टेक
लखि प्रभात प्रकृति की शोभा, बारबार हरषावो रे ॥
प्रभु की दया सुमिर निज मनमें, सरल स्वभाव उपजावो रे ।
हो कृतज्ञ प्रेम में उनके, नैनन नीर बहावो रे ॥
ब्रह्म रूप सागर में मन को, बारम्बार डुबावो रे ।
'जीवन' शीतल लहरें ले ले, आतमा ताप बुझावो रे ॥

वन्दना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देवः ॥

भजन

भोले बाबा बसो मोरी नगरी ॥टेर
तुमरे बैल को मेवा मंगाऊँ, तुमको पिलाऊं भंग भरी गगरी॥१

जो निरजापति जानत नाहीं, तिनके करम धर्म गये बिगरी ॥२
'देवीसहाय' मगन निशिवासर, शिव शिव नाम जपत गणपकारी ॥३

भजन

मोहि प्रभु राखो अपनी शरण में ॥टेक
अपरम्पार पार नहीं तेरो कहो कहां लो क्या करना ।
मन कम वचन आस एक तेरी होऊ जन्म या मरना ॥
अविरल भक्ति के कारण तुम पर है वचन देऊ धरना ।
जन 'अभिलाषिदास' कहै चाहो मुक्ति गत तरना ॥

भजन

आज सब मिल गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद ।
जिनका यश नित गाते हैं गन्धर्व मुनि जन धन्यवाद ॥टेक
मन्दिरों में कंदरों में पर्वतों के शिखर पर ।
देते हैं लगातार सौ-सौ बार मुनिवर धन्यवाद ॥१
करते हैं जंगल में मंगल पक्षी गण हर शाख पर ।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद ॥२
कूप में तालाब में सागर की गहरी धार में ।
प्रेम रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद ॥३
शादियों में कीर्तनों में यज्ञ और उत्सव के आदि ।
मीठे स्वर में चाहिए करें नारी नर सब धन्यवाद ॥४
गान कर 'अमीचन्द' भजनानन्द ईश्वर स्तुति ।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता उस प्रभु के धन्यवाद ॥५

भजन

मैं उनके दर्श की प्यासी ॥टेक
जिनका ऋषि मुनि ध्यान धरत हैं योगी योगाभ्यासी ।
जिनको कहते अजर अशोकी आश्रय जिनके हैं त्रिलोकी॥१

वह जन्मे न वह मरे, अकाल पुरुष अविनाशी ।
वह अच्छेद अनंत अवर्ण है अक्षर और अनादि ॥२
वह अमूर्त और अनुपम प्रभु सर्व निवासी ।
जिस बल जा का अटल राज है सृष्टि सकल है दासी ॥३
'अमीचन्द' जिनसे होत प्रकाशन रवि शशि अग्नि प्रकाशी॥४

प्रार्थना

शरण अपनी में रखलीजे दयामय दास हूं तेरा ।
तुझे तजकर कहां जाऊं, हितू कोई और नहीं मेरा ॥१
भटकता हूं मैं मुद्दत से नहीं विश्राम पाता हूं ।
दया की दृष्टि से देखो, नहीं तो डूबता बेड़ा ॥२
सताया राग द्वेषों का तपाया तीनों तापों का ।
दुखाया जन्म मृत्यु का हुआ तंग हाल है मेरा ॥३
दुखों के मेटने वाले तुम्हारा हाल सुन कर मैं ।
शरण में आ गिरा अब तो भरोसा नाथ है तेरा ॥४
क्षमा अपराध कर मेरे फकत अब आश है तेरी ।
दया 'बलदेव' पर करके बनाले नाथ अब चेरा ॥५

शब्द

जपो रे मन मूल मन्त्र ओंकार ॥ टेक
ओंकार ते वेद प्रकट भये विद्या का भंडार ॥१
ओंकार को ध्यान धरे जो हो जाये भवपार ॥२
वेद के आदि अन्त और मध्य में ऋषि करें उच्चार ॥३
निरंकार और ज्योतिस्वरूपा आप में आप विहार ॥४

भजन

मातु सहायक स्वामी सखा तुम ही एक नाथ हमारे हो ।
है बंधु और आधार नहीं तिनके तुम ही रखवारे हो ॥१

सब शांति सदा सुखदायक हो दुख दुर्गुण नाशन हारे हो
अविनाश करी सगरे जग की अतिशय करुणा उर धारे हो
भूमि है हम ही तुमको तुम तो हमरी सुधि नहीं बिसारे हो
उपकारन को कछु अन्त नहीं छिन ही छिन जो विस्तारे हो
महाराज महा महिमा तुमरी समझे बिरले बुधवारे हो
शुभ शान्ति निकेतन प्रेम निधे मन मन्दिर के उजियारे हो
यही जीवन के तुम जीवन हो इन प्राणन के तुम प्यारे हो
तुम सों प्रभु पाय 'प्रताप' हरि केहि के अब और सहारे

भजन

कर कृपा पार उतारियो मेरी टूटी सी किश्ती है ॥
तुम अविनाशी अजर अमर हो सारे भू मंडल के घर हो
सब के भीतर अरु बाहर हो कारीगर बड़े भारी हो।
रचो अजब सकल सृष्टि है ॥१
सबका न्याय करो तुम न्याई बिन वजीर अरु बिना सिपाही
करो फैसला कलम न स्याही ऐसे न्यायकारी हो।
नहीं गल्ती पड़ सकती है ॥२
हमने दुःख भोगे हैं भारी बहुत हुई दुर्दशा हमारी।
अब हम आये शरण तुम्हारी तुम सम मेरी दौड़ है।
तारो तो तर सकती है ॥३
बिन कृपा करुणा निधि तेरी कुछ नहीं पार बसाती मेरी
कहै 'तेजसिंह' भारत की बेड़ी काट सभी दुख टारियो।
जो हृदय कुमति बसती है ॥४

भजन राग असावरी

प्रभुजी मैं शरण तुम्हारी आया, गंजन गर्व भक्त भय भंज
दूर करो मोह माया ॥टे

लख चौरासी बहु दुख रासी, जन्म मरण भटकाया।
चार खान बाण संयम का, लम्बा फेर फिराया ॥१
आप दयानिधि अधम उधारण, अगम निगम यश गाया।
अजामिल गज गणिका सबरी, परम गति पहुँचाया ॥२
कृपा भई तुम्हारी जब तो, मिली मनुष्य की काया।
झूँठी प्रीत विषय रस फंस के, ध्यान तेरा बिसराया ॥३
मैं दास हीन अधीन तुम्हारे, करो दीन पर दाया।
'ज्ञानस्वरूप' को बख्शो, निज पद आवागमन मिटाया ॥४

उपासना

ॐ है करता विधाता ॐ पालन हार है ॥
ॐ है दुख का विनाशक ॐ सर्वानन्द है।
ॐ है बल तेज धारी ॐ करुणा कन्द है ॥
ॐ है सबका पूज्य हम ॐ का पूजन करें।
ॐ ही के ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें ॥

भजन

तुम हो प्रभु चांद मैं हूं चकोरा, तुम हो कमल फूल मैं रस का भौंरा।
ज्योति तुम्हारी का मैं हूं पतंगा, आनन्द घन तुम हो मैं वन का मोरा॥
जैसे है चुम्बक की लोहे से प्रीति, आकर्षण करें मोही लगातार तोरा।
पानी बिना जैसे हो मीन व्याकुल, ऐसे ही तड़पाया तेरा विछोड़ा॥
इक बूंद जलका मैं प्यासा हूं चातक, अमृतकी करो वर्षा हरो ताप मोरा

भजन ईश्वर स्तुति

आनन्द रूप भगवन् किस भांति तुम को पाऊं।
तेरे समीप स्वामी मैं किस तरह से आऊं ॥टेर
सुख मूल भक्ति रूपम् मंगल कुशल स्वरूपम्।
घड़ियाल शंख को क्या सम्मुख तेरे बजाऊं ॥१

अनुपम परम छबीले विराजत रंग रंगीले ।
कंटक सदा है फूलका क्या फिर तेरे चढ़ाऊं ।।२
कोटानुकोटि भूमि उस पर असंख्य प्राणी ।
जगदीश अपना नम्बर मैं कौनसा गिनाऊं ।।३
श्री लक्ष्मी है तेरी निश दिन चरण की दासी ।
तांबे का एक पैसा मैं किस तरह चढ़ाऊं ।।४
गंगा है तेरी दासी सेवक है इन्द्र तेरा ।
तेरे शरीर पर क्या दो चुल्लू जल चढ़ाऊं ।।५
छोटे से दास तेरे रवि चन्द्र है उपस्थित ।
करते हैं नित उजाला घृत दीप क्या जलाऊं ।।६
विनती 'किशोर' की है निश दिन यही दयामय ।
हृदय में जो हो तेरी आंखों में समाजाऊं ।।७

गजल

ओ नर भजन कर हर का समझ है थोड़ी जिन्दगानी ।
तू आया था भजन करने लगा करने यहां मन मानी ।।टेर
करोड़ों बन्द से छुट कर मनुष्य का जन्म मिलता है ।
भूल गया बात तू पिछली करन लगा है शैतानी ।।१
तेरी मिट्टी की काया है ये मिल मिट्टी में जाये जी ।
उगेगी घास इस तन पर चरेंगी गाय मस्तानी ।।२
नींद में सो रहा पागल भूल कर कौल तू अपना ।
भजन की कह के आया था गया क्यों भूल अभिमानी ।।३
'किशोरी लाल' कर भक्ति उमर तेरी बीत है जानी ।
ढलेगा नूर यह जोबन ढले जयूं ओस का पानी ।।४

भजन

विधाता तू हमारा है तुही विज्ञान दाता है ।
बिना तेरी दया कोई नहीं आनन्द पाता है ।।टेक
तितिक्षा की कसौटी पर जिसे तू जांच लेता है ।
उसी विद्याधिकारी को अविद्या से छुड़ाता है ।।१
सताता जो न औरों को न धोखा आप खाता है ।
वही सद्भक्त है तेरा सदाचारी कहाता है ।।२
सदा जो न्याय का प्यारी प्रजा को दान देता है ।
महाराजा उसी को तू बड़ा राजा बनाता है ।।३
तजे जो धर्म की धारा कुकर्मों को बहाता है ।
न ऐसे नीच पापी को कभी ऊंचा बिठाता है ।।४
स्वयम्भू 'शंकरानन्दो' तुझे जो जान लेता है ।
वही कैवल्य सत्ता की महत्ता में समाता है ।।५

भजन

अजब हैरान हूं भगवन् तुम्हें क्यों कर रिझाऊं मैं ।
नहीं वस्तु कोई ऐसी जिसे सेवा में लाऊं मैं ।।टेर
करूं किस तौर आवाहन कि तुम सर्वत्र व्यापक हो ।
निरादर है बुलाने को अगर घण्टा बजाऊं मैं ।।१
तुम्हीं हो मूर्ति में भी तुम्हीं व्यापक हो फूलों में ।
भला भगवान् को भगवान् पर क्यों कर चढ़ाऊं मैं ।।२
लगाना भोग कुछ तुमको ये इक अपमान करना है ।
खिलाता है जो सब जग को उसे कैसे खिलाऊं मैं ।।३
तुम्हारी ज्योति से रोशन हैं सूरज चांद अरु तारे ।
महा अन्धेर है तुमको अगर दीपक जलाऊं मैं ।।४
भुजायें हैं न गर्दन है न सीना है न पेशानी ।
तू है निरलेप नारायण कहां चन्दन लगाऊं मैं ।।५

कहे 'नादान' है यह जन जो पहुंचे आपकी धूनी में ।
अपार विश्व को तुमने तुम्हें कैसे बताऊं मैं ॥६

भजन

तुम्हारे दिव्य दर्शन की मैं इच्छा लेके आया हूँ ॥टेक
पिलादो प्रेम का अमृत पियासा लेके आया हूँ ॥१
रतन अनमोल लाने वाले लाते भेंट को तेरी ।
मैं केवल आंसुओं की अंजुमाला लेके आया हूँ ॥२
जगत के रंग सब झूठे तू अपने रंग में रंग ले ।
मैं अपना ये महा बदरंग बाना लेके आया हूँ ॥३
'प्रकाशानन्द' हो जाए मेरी अंधेरी कुटिया में ।
तुम्हारा आसरा विश्वास आशा लेके आया हूँ ॥४

भजन

भगवान् तुम्हारी दुनिया का यह कैसा अजीब नजारा है ॥टेर
कहीं रेत के ऊंचे टीले हैं, कहीं गंगा यमुन की धारा है ।
एक ओर समुन्दर के जल का नहीं आता बारा पारा है ॥१
छोटे-छोटे पक्षी प्रातः मस्तानी बोली बोल रहे ।
और कोयल ने मीठे स्वर में प्रभु तेरा नाम उचारा है ॥२
तू जाने कितना सुन्दर है जब इतनी सुन्दर माया है ।
इस 'जीवन' का तू जीवन है भक्तों का एक सहारा है ॥३

दोहा

कबीरा सोता क्या करे जागो जपो मुरार ।
एक दिना है सोवना लम्बे पांव पसार ॥

भजन बतर्ज फिल्म-हर-हर महादेव

शिव शंकर भोले भाले तुमको लाखों प्रणाम ।
कैलाश बसाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥टेर

जूट जटा सिर गंग विराजे, डमरू डम-डम डमरू बाजे ।
चन्द्रकला मस्तक पर राजे, भाल त्रिनेत्र शिखा विराजे ॥
गल भुजंग हैं काले ॥१
शीश पे सोहे गंग की धारा, जो करुणा सागर करतारा ।
महिमा तुम्हरी अगम अपारा, जय महेश जय भव भय हारा ॥
भस्म रमाने वाले ॥२
रुद्र माल गले भुजंग माला, कर त्रिशूल सोहे कर ताला ।
जय देव जय जगति कृपाला, नील कंठ कटि में मृगछाला ॥
कानन कुण्डल वाले ॥३
वृषवाहन अंग विभूत, देवन के देव निर्गुण रूप ।
निगम अगम शान्तिमय स्वरूप, त्रिलोचन त्रिपुरारी अनूप ॥
कष्ट मिटाने वाले ॥४
शिवनाथ जय-जय शिव शंकर, 'केदारनाथ' करुणा के सागर ।
बंब-बंब भोले जय हर-हर, निराकार जय विश्वम्भर ॥
भक्तों को अपनाने वाले ॥५

भजन राग कव्वाली

पल भर में भर भण्डार दिया शिव शंकर भोले बाबा ने ॥टेर
सब भक्तों को भव पार किया, शिव शंकर भोले बाबा ने ।
भक्तों को बुद्धि ज्ञान दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने ॥१
हिरनाकुश तप से अमर हुवा, देवों को भारी खतरा हुवा ।
पृथ्वी का राज्य विस्तार दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने ॥२
लंका गढ़ पाया रावण ने, कैलाश उठाया रावण ने ।
भुज बल ताकत उन्हें डाल दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने ॥३
बल परसुराम ने पाया था, वीरों का मान घटाया था ।
बर शक्ति उनको अपार दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने ॥४

अर्जुन को पाशुपति प्राप्त किया, रणजीत उन्हें वरदान दिया।
रण में खल गण संहार किया, शिव शंकर भोले बाबा ने ॥५
मानुष अनेक कंगाल हुए, सेवा से मालामाल हुए।
कहें 'विलम' कष्ट कुल तार दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने ॥६

(दोहा) छन्द

ओ३म् अक्षर अलख आवाज है अविनाशी निराकार।
पांच तत्व की झलक से सभा रची करतार ॥
शिव शक्ति की उत्पत्ति प्रथम नाम गणेश।
चार कोट चौदह भवन में तेरा ही प्रवेश ॥
पर उपकारी संसार को पूर रचो दिन रात।
'भगवानदास' विनती करे उगते ही प्रभात ॥

भजन

तू तो उड़जा पंछी यार तेरा कौन करे इतबार ! टेक
नौ खिड़की का बना पींजरा तेरे खुले पड़े सब द्वार ॥
आना जग में मुश्किल तेरा जाना सहज सम्हार।
तेरे कारण महल बनवाए सच्चे सुत धन यार ॥
सबको छोड़ जात इक पल में निरमोही निरधार।
सुन्दर भोजन नित्य खिलाऊं पहनाऊं शृंगार ॥
मल-मल इतर फुलेल लगाऊं बांधूं बंध हजार।
रोका रहे ना निकर जावना घोड़े का असवार ॥
सकल अर्थ का यही अर्थ है सकल बाल की बात।
[illegible] सुमिरन राम नाम का कर लीजे दिन रात।

भजन

तुम्हें भाव धर्म दिखाना पड़ेगा, गिरा देश फिर से उठाना पड़ेगा ॥
हुआ भाई-भाई का दुश्मन यहां पर, हमें प्रेम प्याला पिलाना पड़ेगा
बंधे एक धागे हिन्दू ये जाती, इन्हें ज्ञान गीता का बताना पड़ेगा ॥

पड़ा नींद में जो रहा भारत, प्रभु आपको आ जगाना पड़ेगा ॥
अगर आप अवतार लेकर पधारो, तो फिर धर्म का डंका बजाना पड़ेगा
इस 'जीवन' की इक यही है तमन्ना, विजय का झंडा लहराना पड़ेगा।

भजन

शरण प्रभु की आवो रे यही समय है प्यारे ।टेर
छल कपट और झूठ को त्यागो सत्य से चित्त लगावो रे ॥१
उदय हुआ ओ३म् नाम भानु आवो दर्शन पावो रे ॥२
पान करो इस अमृत फल को उत्तम पदवी पावो रे ॥३
मनुष्य जन्म अमोलक है यह वृथा न इसे गंवावो रे ॥४
करलो नाम हरि का सुमिरन अन्त को न पछतावो रे ॥५
धन्य दया जो सबको देवे पल मत तुम बिसरावो रे ॥६
छोटे बड़े सब मिलकर खुशी से गुण ईश्वर के गावो रे ॥७

भजन राग आसावरी

धन गुरो हमें तुम्हारी आसा।
तारण तरण अभय पद दाता तुम स्वामी हम दासा ।टेर
बाजीगर ने बाग लगाया नैना किया तमाशा।
जल की बूंद से पिण्ड बनाके भीतर मेली स्वांसा ॥१
देह में रूम-रूम में चमड़ी, चमड़ी में है मासा।
मास में हाड़ हाड़ में गुदा गुदा में बिंद प्रकाशा ॥२
बिंद में पवन पवन में प्राणा प्राणा में पुरुष निवासा।
बोलत आप और न दूजा रूम-रूम में वासा ॥३
यह सब खेल रचा धन गुरु ने मन धरिता दिखलासा।
'कल्याण भारती' संतो के शरणे सत सोहंग प्रकाशा ॥४

दोहा

रति फिरे जब आन के शत्रु होते यार।
निर्धन से लाला बने नौकर डोले द्वार ॥

पड़े कोहड़ पर लेके मूसली, बा या गुदके सुखी सूखड़ी ।
पूंछे मूर्ख मार अकड़ी, बैठे ध्यान लगाय के ॥
बन रहा मेहनती मलबाला ॥४॥ कोई-
सीख सीख नर ठगी पुरानी, भोगे लड़के नार बिगानी ।
कहै सभा में सच्ची बानी, 'बस्तीराम' बनाय के ॥
डाबर के रहने वाले ॥६॥ कोई-

भजन टेक

बिन भेद भर्म नहीं टूटा, मैंने सारे जतन बना लिए ॥टेर
किसने झूलने और नहानी, कवि गिरधर की कुण्डली जानी ।
नाय सीख राह बहु ठानी, रांका ढोला गा लिए ॥
यूं ही मोक मोक सिर फूटा ॥१
पिंड भरा लिए कुरुक्षेत्र के, नहाए से पाप कटे न अन्तर के ।
जल स्नान दर्श पत्थर के, जहां गया वहां पा लिए ॥
यों ही फिरा जगत में रूठा ॥२
चारों धाम फिरा में ठानी, हिंगलाज कलकत्ते वाली ।
पुष्कर प्रयाग गया में काशी, गंगा यमुना नहा लिए ॥
खाया जगन्नाथ पर झूंठा ॥३
काशी जाय फिरा पचकोसी, कटे न पाप हुआ निर्दोषी ।
राखे व्रत आंता मासी, बहुत कष्ट सहे ॥
मन्दिरों में पीतल कूटा ॥४
जैनी कुरानी ईरानी सारे, वेद विरोधी बाजी हारे ।
मस्जिद गिरजा ठाकुर द्वारे, सभी समझ समझा लिए ॥
मन हठ गया सबसे पूठा ॥५
मोड़ों का भी कर लई संगत, झूठी देखी उनकी रंगत ।
बने फिरे घर घर के मंगत, बहुते मूंड मुंडा लिए ॥
धोखा दे सब जग लूटा ॥६

जाती की क्या कहूं गति जी, बहुत पूजा लिए नार सतीजी ।
मुख भी मेरी मूंड मती जी, बिन समझे धक्के खा लिए ॥
अब मिल गया वेद अनूठा ॥७
जब से सुनी वेद की वाणी, तब से ही गया जाल जानी ।
'दासाराम' कहै गुण ध्यानी, मतलब के सो पा लिए ॥
गड़ गया साच का खूंटा ॥८

भजन

सब पैसे का मेल जगत में और नहीं कोई नाता ॥टेर
जिसने पैसा खूब कमाया, सो नर भरत मन भाता ।
बिन पैसे की नारी भी, कहे मेरे घर गुहाला ॥१
पैसा हो तो आगे बोले, बिन पैसा कोई मुख न बोले ।
दूध पिलावे पंखा डुलावे कहे तात और मात ॥२
पैसा होय बहन, कहै भाई, सास सुसर कहै जमाई ।
करें लाड़ चाव चाची ताई, हंस हंस बोले भ्राता ॥३
पैसा हो कन्या दे घर की, गुण अवगुण देखे न वर की ।
आज लड़के में ही भर जावे, पैसा ही पैसा मन भाता ॥४
काशी जी से पंडित आवे, पैसा हो तो वेद सुनावे ।
वेश्या नाचे गाना गावे, चला गुणी है आता ॥५
पैसे से है चतुराई आवे, बिन पैसे मूर्ख कहलावे ।
'रामजीलाल' करी का गुण गावे पैसा देगा दाता ॥६

भजन राग बहर जकड़ी

विद्या बिन नैया कैसे होगी भव पार,
विद्या सीख जगत में जागो हो जाए उद्धार ॥टेक
विद्या बिन नर करे मजूरी, ढोवे टोकरी करे बेगार ।
नीच गंवार मोंदू कहें सारे, सभी जगह मिलती धुत्कार ॥
घास खोद नित करे गुजारा, सिर पर काठियों का भार ।
सभी ठौर ठुकराया जावे, कोई न करता है प्यार ॥१

हाकिम साहिब तहसीलदार, डिप्टी कलक्टर जागीरदार ।
विद्या सीख भए बने डाक्टर, वैद्य हकीम करे उपचार ॥
थानेदार हवलदार दरोगा, अधिकारी बन बैठे थार ।
कोई न्यायाधीश प्रधानमन्त्री, कानून मन्त्री बने अपार ॥
कोई गवर्नर सबके ऊपर, करता है सब पर अधिकार ।
देश विदेशों में विद्या पुजती, कामधेनु सम है करतार ॥
विद्या भूषण नर का सारा बता गये सब शास्त्र सार ।
बिन विद्या के पशु समान है, कर देखा है विचार ॥
विद्या के बल बना वकील, बैरिस्टर जन करे हैं न्याय ।
विद्या के बल शक्ति उपजे, खेती करे और व्यौपार ॥
डिप्टी कमिश्नर चीफ कमिश्नर, धन चमका दे यह संसार ।
विद्या से विज्ञान खोज कर, करे देश उपकार ॥
नये नये आविष्कारों से, करदे सभी ओर यशगान ।
शिरोमणि बन चमके देश में, करे देश विदेशों नाम ॥
कारीगर और कलाकार बन, चमका दें निज भान ।
'कंवरसेन' ज्ञान विज्ञान बिना, सूना सब संसार ॥३

आरती

हर हर हर हर होय रही आरती, जय जय बोलो श्री आलम ।
निर्भय नगारा बाजे अगड़ बम्म बम्म ॥
सुख भर बैठा बाबा डोर हिलावे, तेरी सेवा में बाबा रहता हरदम ।
हर हर हर हर होय रही आरती ।
तुम ही पेट तुम्हीं पटवारी, मेरे तो हाल की तुने ही मालूम ।
हर हर हर हर होय रही आरती ।
चार कूंट और चौदह भवन में, सांची फिरे म्हारी साईं की कलम ।
हर हर हर हर होय रही आरती ।
चार चरणजती 'गोरख' बोले, भेख बाना को राखो नी कलम ।
हर हर हर हर होय रही आरती, जय बोलो बाबा श्री आलम

दोहा

पूरण शान्ति उनको मिले पढ़े जो ग्रन्थ विचार ।
लोहा से कंचन होवे पूर्ण सभी विकार ॥

भजन

काम क्रोध मद लोभ मोह है, हे गुरु इनसे मेरी मत मारी ।।टेक
…कल बड़ा रूप का मेरा, पंच तत्व में किया बसेरा ।
…ष्टी आदि कर्म से लागो, बुद्धि है सबसे न्यारी ॥१
…आदि जन्म का हूं अधिकारी, दुःख में याद आई बुढ़ारी ।
…नुष्य खोज खोज के देखा, बिगड़ रही केसर क्यारी ॥२
शून्य समाधि में जाय समाया, चेला गुरु का कुछ नहीं पाया ।
आप ही आप पुकारत आया, अब समझा मूर्ख सारी ॥३
शून ही आसन अमर सिंहासन, धुन में प्राण करे सुख वासन ।
चरण मछन्दर 'गोरख' बोले, ज्ञान ज्ञान हुआ हितकारी ॥४

भजन

हर हर हर हर होय हिया में, और बातां सब झूंठी ।।टेर
प्रेम घड़ा म्हारे सतगुरु लाये, अमृत बूंदां हद मीठी ।
…के रंग महल में, साधो लालां हद लूटी ॥१
झनझुन रुनझुन बाजे बाजा, जगमग झलक रही ज्योति ।
सोहंकार के सोहंकार में, हंसा चुग रहा निज मोती ॥२
पांच चोर तेरी काया नगर में, इनको पकड़ो सिर चोटी ।
पांचों को मार पचीसों को बसकर, जब जानूं थारी मजबूती ॥३
… सुमिरन का सेल बनाले, ढाल बनाले धीरज की ।
काम क्रोध मद मार हटाले, जब जानूं तेरी रजपूती ॥४
…की धड़ी का तोल बनाले, काण न राखो एक रत्ती ।
चरण मछंदर जती 'गोरख' बोले, अलख लिखे कोई खरा जती ॥५

जन जन हमसे प्रीत करी थी, साहिब मुख से ना बोल्या ।
मन से छोड़ करी सत गुरु से, साहिब परदा तब खोल्या ॥२
अचरज ऐसो सुणो भाई साधो, बूंद दिया में समद समाय रह्या।
अड़सठ तीरथ घट ही में गंगा, हरदम मनुवा नहाय रह्या ॥३
बिना बीज का बिरछा देख्या, चौदह लोक में छाय रह्या ।
धरण गगन जब दोनों छाड़ि, सबसे आगे जाय रह्या ॥४
रहम नाथ गुरु धरिया दस्तक, मोह भ्रम सब दूर कह्या ।
'नाथ गुलाब' मिट्या दुःख तेरा, अमरापुर में बास हुवा ॥५

दोहा

साध सती अरु सूरमा, जो जन लेसी जाण ।
अभिमानी उस जीवका कबहुं न होय कल्याण ॥
परवाना परतीत ले, समझे सुरत लगाय।
बना नाथ के आशिर्वा, सहज ही मुक्त हो जाय ॥

भजन राग मंगल

आज दिहाड़ो सखवा देवरो, गावां मंगलाचार । टेर
सन्त द्वारे चालो सखी, सज सोलह सिणगार ।
सपुता का लंगर पहर लो, धन आज रो दिन वार ॥१
पांच सखी भेली हुई, मिली पचीसों आण ।
अर्ध ऊर्ध आसन किया, कर रही पवन पिछाण ॥२
तन केरो दीपक करूं, बाती करूं मनसार ।
तेल सिचाऊं प्रेम रो, जाग्यो ब्रह्म विचार ॥३
इड़ा पिंगला सोझ कर, सुषमण कियो निहार ।
रिम झिम करती कामनी, आई त्रिवेणी द्वार ॥४
दसवें में दरशन भया, अनहद घुरिया निसाण ।
जोत ज्वाला मिल हो रही, यह सांचा सैनाण ॥५
छूड़ी हथाई हरि नाम री, कर रिया सन्त विलास ।
बीज बिराजे गुरु आपण, करोड़ भानु प्रकाश ॥६

ओमाराम गुरु भेटिया, भागा भ्रम अंधियार ।
'बनानाथ' चरणों रहो, नित प्रति करो दीदार ॥७

भजन राग आसावरी

साहिब थारी कुदरत पर कुरबानी ।
अगम बिरला जाणी, परम गुरु कुदरत पर कुरबानी ॥टेर
पल में राव रंक कर डारे, रंक करे सुल्तानी ।
तेरी गति तू ही जाणे कर्ता, मैं हेरत रह्यो हेरानी ॥१
तैं गज सिन्धु डूबतो त्यारो, चीर द्रोपती रानी ।
भारत में भंवरी रा अण्डा, राख लियो हरि जानी ॥२
हरि चंद कंवर तारादे राणी, जा भरियो नीच घर पाणी ।
संकट दे सन्त सहाय करी जद, दर्शन दिया हरि जानी ॥३
केताई सन्त हुआ धरनीपर, ज्यारी विगत करे कई बानी ।
'बनानाथ, कहे अरज हमारी, सुण साहिब निर्वाणी ॥४

भजन

फकीरी यह रमज निरन्तर जाण ।
वेद किताब बाणी नहीं खाणी रहता आप अजाण ॥ टेर
चाले न अचल गिरे न त्यागे, लीना पद निर्वाण ।
फुरे न अफुर करे न अकरता, अलख उनमनी पिछाण ॥१
सत्य न असत्य दिवस नहीं रजनी, अनुभव एक रस भाण ।
भर्म न कर्म अहं कई पारा, बुद्ध की थकत पिछाण ॥२
दोय न एक ज्ञेय नहीं ज्ञाता, ध्येय ध्याता को हाण ।
परा न अपर दृश्य नहीं दृष्टो, आप ही आप समाण ॥३
जीव ब्रह्म को कहूं न कल्पना, कल्पन हार बिलाण ।
'नवलनाथ' निरञ्जन मिलिया मनु किया उलट पियाण ॥४

भजन

पूरण करिये सोही नारी है, पूरे सो पुरुष कहाय ।
नारी पुरुष मिल जग रचा, कहूं भेद समझाय ॥टेर

पृथ्वी उत्पन्न वारी भई, अन्न जाको करतार।
उसमें खेत अन्न ओखधी, सब रचना आधार ॥१
अन्न रस मांही एक पुरुष, रज बीरज नर अरु नार।
दोनों मिल रचना शरीर की, अन्न रस पुरुष आधार ॥२
पवन मांहि एक पुरुष है, अन्न रस पुरुष के पार।
सर्व रसों को पूर्ती, पवन पुरुष भज सार ॥३
मन मांहि एक पुरुष है, रहे पवन पुरुष कूं धार।
ता करि पुरुष पवन होय, मन पुरुष सविचार ॥४
विज्ञान पुरुष ता उपरे, मन कूं पूरे सोय।
पूरण करे विज्ञान कूं, पुरुष आनन्दमय जोय ॥५
आनन्द पुरुष का रूप है, पुरुष ही आनन्द अपार।
'नवलनाथ' परे कोई नहीं, जिण पूरयो संसार ॥६

दोहा

बार बार विनती करूं, दीन्यो ज्ञान सवाय।
ऐसे नवल नाथ के, चरणों में शीश नवाय॥

भजन बधावा

भव तरने को अवसर आयो ए।
बहुत जन्म के पूर्व पुन्य से मानुष तन पायो ए ॥टेर
ईश्वर कृपा सन्त समागम, गुरु चरणों में आयो ए।
प्रेम के पुष्प ध्यान को धूप, दे चित्त चंदन चढ़ायो ए ॥१
शील सन्तोष अमान अहिंसा, दम दया उर लायो ए।
काम क्रोध मद लोभ मोह को मार भगायो ए ॥२
त्याग वैराग श्रद्धा को धार के, विष भाव हटायो ए।
अनेक युगों के मैल त्याग के, ज्ञान गंगा में न्हायो ए ॥३
गुरु देव पायो नहीं जब, बाहर भ्रमण धायो ए।
सतगुरु शब्द सुनाय के, मोहे आत्म ज्ञान बतायो ए ॥४

नवलनाथ गुरु कृपा करके, भ्रम भूल मिटायो ए।
'उत्तमनाथ' स्वरूप समझ के, निज निश्चय पायो ए ॥५

भजन (हेली)

अब मन गोविन्द गुण गावो ए।
ऐसो रतन समझ से ही जीवो परम पद पावो ए ॥टेर
अघ मृदु राजी होय के, सत्संग में न्हावो ए ॥
मान गुमान मद मत्सर, सब दूर बहावो ए ॥१
सुर दुर्लभ ये नर तन पायके, विरथा न गंवावो ए।
स्वांसो स्वांस शिव सुमिर के, जग जीत ही जावो ए ॥२
जल थल अनल अनिल, नभ में कर ब्रह्म ही भावो ए।
द्वैत भर्म काम कर्म सब, अविद्या कूं टावो ए ॥३
नवल नाथ गुरु शब्द सुनायो, जामें लिव लावो ए।
'उत्तमनाथ' मोहि समझ के, भव भाव मिटावो ए ॥४

दोहा

गुरु देवन के देव हैं, रटत शेष अरु महेश।
शुद्ध स्वरूप लिखाय के, भ्रम न छोड़े लेश॥
कर चल करना होय सो, क्यों यह समय गंवाय।
नहीं भरोसो काल को, प्राण रहे या जाय॥

कुण्डलियां छन्द

सतगुरु साक्षी जीव को, जानत मन की बात।
डूबत ही को त्यार दे, मेटत यम की घात॥
मेटत यम की घात, दास के सब दुःख हरता।
भेद भर्म सब टार के, पार भव सिन्धु से करता॥
वेद ग्रन्थ में गावते, साधो सन्त बखान।
'करणनाथ' कहे सत गुरु, सामर्थ सिन्धु समान॥

भजन राग मधु माधवी

आवो ए सहेलियो मिलकर मंगल गावो ए ।
मंगल गावो ए अपनो देव मनावो ए ॥टेर
सतगुरु आया पांवणा, म्हारे घणो उमावो ए ।
बाजोठ लाया चन्दन को, सेवा कर पावो ए ॥१
पाँच सखी रिलमिल कर आवो, गुरुन न्हावो ए ।
आजम चौकी डाल चौक में, सतगुरुन बिठावो ए ॥२
भोजन लाव छत्तीसों ला, गुरु भेंट चढ़ावो ए ।
पान फूल वर्षाय के, शिर चरण नवावो ए ॥३
कंचन थाल चौमुखो दिवलो, कपूर जलावो ए ।
मिल-जुल करो आरती, गुरां री गावो बधावो ए ॥४
गुरु से कपट रखो मत राई, जो सुख चावो ए ।
'करणनाथ' कर गुरु की सेवा, मौज उड़ावो ए ॥५

भजन राग पहाड़ी

दुनियां में बाबा कोई किसी का नाहीं ॥टेर
क्या रोवे नर देख मृतक को, मेरो-मेरो करे भाई ।
तू भी इक दिन नहीं रहेगा, आखिर चलना चांहीं ॥१
कौरव कंस हिरणाकुश रावण, हो गये बली घणाई ।
ऐसे-ऐसे बली गए धारण पर, जिनकी खाक न पाई ॥२
उगा सो छिपता नित्य देखो, फूले सो कुमलाई ।
पैदा हुवा सो अन्त मरेगा, चिन्ता मत कर भाई ॥३
त्याग कल्पना झूठे जग की, राम भजो मन मांही ।
'करणनाथ' कहे सब दुःख नाशे, आनन्द रहो सदाई ॥४

दोहा

बहुत गये बहु जा रहे, बहु हो रहे तैयार ।
सदा कोई थिर ना रहे, देखो नयन पसार ॥

भजन राग आसावरी

अब नर चेत समझ चल भाई ।
काची काया री भाई कांई भरोसो, कागज ज्यूं गल जाई ॥टेक
चौरासी दुःख भरतां-भरतां, अब मानुष देही पाई ।
अब तो जाग त्याग मोह मद, कर कुछ सुफल कमाई ॥१
जैसे मोती होय ओस को, ये तन ऐसो कहाई ।
बिन सत देर लगे नहीं पलकी, तन की झूठी बड़ाई ॥२
गर्भ वास ही नरक वास है, यामें चैन कुछ नाहीं ।
चौरासी से बचनो चाहे तो, नित सुमरो सत सांई ॥३
मगलनाथ गुरु पूरा मिलिया, पल पल रहे चिताई ।
'करणनाथ' कहे सुनो भाई साधो, करो हरि भजन सदाई ॥४

दोहा

क्यों रोवे अरु सिर धुने, देखत जग की रीत ।
कोई किसी का है नहीं, झूठी जग की प्रीत ॥

भजन राग सोरठ

मन तू अब भी चेत मेरा यार ।
पल पल छिन छिन घटत उमरिया ज्यों अंजली को नीर ॥टेर
पूर्व भाग पुन्य कोई जागया, पायो मनुष्य शरीर ।
अबहू चेत सुमर सत सांई, तोड़ कुटम्ब को सीर ॥१
यो संसार जाग मतलब को, भाई बन्धु सुत हीर ।
सम्पति देख सज्जन बन लूटे, भगे देखकर भीर ॥२
तज प्रपंच विषय मोह मन से, दिल बिच धारो धीर ।
सबसे तोड़ जोड़ नेह हरि से, हो जाए परलो तीर ॥३
यह तन बार बार नहीं पावो, मानो वचन आखीर ।
'करणनाथ' कहे सुमिर नर हरि को, मिट जाय यम की पीर ॥४

अब मालूम मेरे फिर ऊपर, काल कोप के छाई हो ।
तू क्यों विकल मोह सागर में, बहुतो थाह न पाई हो ॥३
अजहुँ चेत हेत कर बन्दे, हरि से जन्म सुधराई हो ।
'गंगादास' कहे मन मेरे, मत कर आस पराई हो ॥४

दोहा

शब्द शब्द कहते फिरें मुँह के बहुत लबार ।
पर नहीं आवत तनिक भी शब्द शब्द का सार ॥
पिंगल छुआ न हाथ से गुरु से लिया न ज्ञान ।
ऐसे कवि क्या करेंगे कविता का रस पान ॥
आकार उकार मकार से बना एक ओंकार ।
अलग-अलग इनका अर्थ करो तब समझूं हुशियार ॥

भजन

सुनो साधो भाई सन्देशा चित धर के ।
बिन बादल बरसे बूंदां भर के ॥टेर
धरती बरसे अम्बर भीगे, मेह आयो खूब उभर के ।
ताल तलैया सभी सूख गये, समुन्द्र चले उछल के ॥१
काटे पेड़ फूल फल आवे, सींचत जाय कमल के ।
मछली जल को चढ़कर तोड़े, मेंढक लाये भरके ॥२
गाय दुहाले कुतिया ओढ़े, सोवे पांव फैला के ।
बिल्ली चली अपने सुसराल, आंखों में कजरा भरके ॥३
भैंस पदमनी सिंगार बनायो, गो सर हार पहन के ।
कहे 'रामनाथ' सुनो भाई साधो, नाना उत्तर देके ॥४

भजन

टिकटिया काट दो स्वामी, हमें बैकुण्ठ जाना है ।
हरि की शरण में जाकर, प्रभु का दर्श पाना है । टेर

कोई जन राम के प्यारे, राम की शरण में पहुँचे ।
देर हमको हुई भारी, माफ जाकर कराना है ॥१
फंसा माया के संकट में, कुटुम्ब परिवार में मिल के ।
निकलना हो गया मुश्किल, हुआ यह दिल दीवाना है ॥२
काम घर के लगे हैं ऐसे, काल आने की बिसराई ।
समय अब रह गया थोड़ा, विनय उनसे सुनाना है ॥३
यह गाड़ी आपकी चलती, चलाते आप ही इसको ।
हो मालिक आप स्टेशन के, दया करके चढ़ाना है ॥४
न थोथा पास है मेरे, न कोई किस्ती करानी है ।
टिकट एक प्रेम का देकर, सिर्फ गाड़ी बिठाना है ॥५
सुनी विनती यह स्वामी ने, टिकट निज नाम की देकर ।
बिठाया तुरन्त गाड़ी में, हुआ निर्भय रवाना है ॥६
माफ कर राह का चक्कर, ब्रह्म के धाम में पहुँचे ।
मिले बैकुण्ठ के मालिक, दास अपना पहचाना है ॥७
माफ अवगुण किये सारे, दयालु दीनबन्धु ने ।
शरण में रख लिया अपने, कष्ट अपने समाना है ॥८
'नाथ कवि' के हृदय वासी, चराचर में समाये है ।
राम सबके पिता माता, पतित पावन सुहाना है ॥९

भजन (आरती)

मन्दिर चालो जी, बैकुण्ठनाथ का दर्शन करस्यांजी ॥टेर
आभा सामा बण्या तिबारा, मन्दिर की छबि न्यारी जी ।
कवाड़िया की बहार सांवरा, म्हाने लागे प्यारी जी ॥१
जामो प्रभुजी के सोहे केशरियो, दुपट्टा की छबि न्यारी जी ।
कलंगी की बहार सांवरा, म्हाने लागे प्यारी जी ॥२
रतन जड़ित कंचन को गहनो, सर्व सोना को सोहे जी ।
ठोडी मंलो हीरो सांवरा, म्हारो मनड़ो मोहे जी ॥३

थी देखी और सोभा देखी, दोनों तरफ से मोहे जी ।
लिख लाल की बहार सांवरा, म्हारो मनड़ो मोहे जी ॥४
'अमृतवाडाळो' यो उठ बोले, एक अर्ज म्हारी मानो जी ।
जन्म जन्मको चाकर नरसी, सांवरा म्हाने शरण्या राखीजो ॥५

आरती श्री रामदेवजी की

रामा धणी थारी करु आरती नित पूर्ण दातार जी ।
साचा धणी थारी करूं आरती ॥टेक
पहलो जन्म लियो दशरथ के राम लक्षन अवतार जी ॥१
दूजो जन्म लियो वासु के देव कृष्ण अवतार जी ॥२
तीजो जन्म लियो नन्दजी के कान कुंवर अवतार जी ॥३
चौथो जन्म लियो तंवरां के रामा कुंवर अवतार जी ॥४
हरि शरणे भाटी हीरानंद बोल्या पत दासाकी राखीओ ॥५

आरती भोलेनाथजी की

धन धन भोले नाथ तुम्हारे कौड़ी नहीं खजाने में ।
तीन लोक बस्ती में बसाये, आप बसे वीराने में ॥टेर
जटा जूट का मुकुट शीश पर, गले में मुन्डों की माला ।
माथे पर छोटा सा चन्द्रमा, कपाल का कर में प्याला ॥
जिसे देखकर भय व्यापे, सो गले बिच लपटा काला ।
और तीसरे नेत्र में तुम्हारे, महा प्रलय की है ज्वाला ॥
पीने को हर वक्त भांग, और आक धतूरा खाने में ।
तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे वीराने में ॥१
चर्म शेर का वस्त्र पुराना, बूढ़ा बैल सवारी को ।
जिस पर तुम्हारी सेवा करती, धन-धन गौरा बिचारी को ॥
वो तो राजा की पुत्री है और ब्याही गई भिखारी को ।
क्या जाने क्या देखा उसने, नाथ तेरी सरदारी को ॥

सुनी तुम्हारे ब्याह की शोभा, भिखमंगों के बाने में ।
तीन लोक बस्ती में बसाये, आप बसे वीराने में ॥२
नाम तुम्हारे अनेक हैं पर सब से उत्तम है गंगा ।
वाही से शोभा पाई है जो विराजती शिर पर गंगा ॥
भूत प्रेत बेताल साथ में, यह लश्कर सब से चंगा ।
तीन लोक के दाता होकर आप बने क्यूं भिख मंगा ॥
अलख मुझे बतलाओ मिले क्या तुमको अलख जगाने में ।
तीन लोक बस्ती में बसाये, आप बसे वीराने में ॥३
यह तो सगुण का स्वरूप है निर्गुण में हो आप ।
पल में प्रलय छिन में रचना तुम्हें नहीं है पुण्य पाप ॥
किसी का ध्यान नहीं है तुमको अपना ही करते हो जाप ।
अपने बोध में आप समाये आपही आप में रहेहो व्याप ॥
हुआ मेरा मन मग्न ये प्रभु, ऐसा नाथ कहाने में ।
तीन लोक बस्ती में बसाये, आप बसे वीराने में ॥४
कुबेर को धन दिया और तुमने दिया इन्द्र को इन्द्रासन ।
अपने तन पर खाक रमाई, नागों के पहने भूषण ॥
भक्ति मुक्ति के दाता हो मुक्ति भी तुम्हारे गहे चरण ।
'देवीसिंह' कहे दास तुम्हारे हित चित से नित करे भजन ॥
बनारसी को सब कुछ बख्शा अपनी जटा हिलाने में ।
तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे वीराने में ॥५

दोहा

प्रेत योनि को पाय के दुःखी भये अज्ञान ।
आप दुःखी दुःख देत है उठ गई सब पहिचान ॥
देह छूटे मन में रहे सहजो जैसी आस ।
देह जन्म वैसे ही मिले, जैसे ही घर बार ॥

चौपाई पद

जाकी रहे आस मन्दिर में होकर पूंछ फिरे घर घर में
रहे वासना द्रव्य भंडारा जन में नाग बने वह कारा।
रहे वासना तिय के घर की छलिया होय चूहरे घर की
रहे वासना तिरिया मांही कोढ़ी स्वान धरे तन यांही।
जाकी रहे पुत्र में आसा सुअर जन्म नीच घर वासा।
जाके मन रहे राज द्वारा हस्ती होय सिर में ले छारा।
रहे वासना वाहन संगा होय जन्म ले वाहन अंगा।
जहां वासना जिस ही जाही यह मत वेद पुराण में गाई।
चरण दास गुरु मोहि बताई तजो वासना 'सहजो बाई'।
बूढ़ा बालक के हो तरुण अकाल मृत्यु इक काल बताई॥
सहज मौत मरे जो कोई यह भी मौत अकाल ही होई।
बिगड़े रोग पक्ष नहीं कीन्यों यह भी मौत अकालही चीन्यों॥
जो कोई भांति विष खा मरे और पावक में कूद मरे।
जल में डूब जाय कोई कैसे लागे प्रेत मरे कोई ऐसे॥
सांप डसे छूटे जो काया महलात के नीचे दबि जाना।
कोई ठग फांसी दे मारे जंगल पशु तोड़ जो डारे॥
अकस्मात जो मृत्यु होई अकाल मृत्यु कहे सहजोबाई।
यह सब मृत्यु अकाल बताई यूं कहती है 'सहजोबाई' ॥२

भजन राग कामोद

सखीरी आज आनन्द देव बधाई।
सतगुरु ने अवतार लियो है रिलमिल मंगल गाई ॥टेर
अवधूत लीला कहा बखानों मोपें कही न जाई।
बहुविधि बाजे बाजन लागे सुनत हिया हुलसाई ॥१
धन्य भादों धन्य तीज सुदि है जा दिन प्रकटे सांई।
धन्य धन्य कुंजो भाग तिहारे चरणदास सुत पाई ॥२

कलियुग में हरि भक्ति चलाई जन की करी सहाई।
श्री सुकदेव करी जब कृपा गावे 'सहजोबाई' ॥३

भजन राग ताल तिताला

आवा काया नगर बसाई।
ज्ञान दृष्टि सूं घट में देखो सुरती निरती लौ लाई ॥टेर
पांच मारी मन बस कर अपने तीनों ताप नसाई।
सत्य संतोष गहे दृढ़ सेती दुर्जन मारि भगाई ॥१
शील संतोष धीरज कूं धारो अनहद बम्ब बजाई।
पाप बनियां रहन ना दीजे धर्म बाजार लगाई ॥२
सुबस बास जब होवे नगरी बैरी रहे ना कोई।
चरणदास गुरु ज्ञान बतायो 'सहजो' संभालो सोई ॥३

मनहर छन्द

चाहे भगवां भेष धर, केश हू जटायें राख।
गुरु बिना विवेक ज्ञान, वैराग नहीं पायगा॥
जावें ऋषिकेश जाय, काशी हरिद्वार नहाय।
गुरु बिना भटकत, फिरता ही तू धायगा॥
चाहे दिन रात पढ़, वेद हू पुराण रट।
गुरु बिन नहीं गति, वोही तुझे तरायगा॥
'चुन्नीलाल' गुरु शरण, जाय कुछ सीख ले।
तब ही कल्याण सुख, शान्ति चिर पायेगा॥

दोहा—तन पवित्र सेवा किये धन पवित्र दिये दान।
मन पवित्र हरि भजन से इस विधि हो कल्याण॥

आरती भजन—तर्ज मारवाड़ी

श्री चार भुजा महाराज मेड़ता रा वासी।
मेरी इतनी अर्ज सुन नाथ काट जम फांसी ॥टेर

ऐसो सच्चिदानन्द सत गुरु मुझे, सो निज दिया लिखाय।
ऐसो 'दास गोपाल' निर्भय भया, जानु' आप के भाय ॥५

कुण्डली

शब्द स्पर्श रूप रस गंध चित मन बुद्ध अहंकार।
इनका स्वभाव गुजार के कर सुमिरन हर बार॥
कर सुमिरन हर बार तार त्रिकुटी लागे।
सुने धर्म का पाठ जीव दसों दिश जागे॥
पांच विषय अन्त करण इन्द्रियाँ बैठे हार।
'जीवाराम' निजस्वरूप का तब पावे दीदार॥

दोहा

पांच तत्व का पुतला मनुष्य ताको नाम।
जाति मनुष्य में है नहीं व्यापक जीवाराम॥
रजो गुण से इन्द्री भई तमो गुण से तत्व पांच।
सतो गुण से भये देवता वरुण दास कहे सांच॥
पांच पच्चीसों देहा संग गुण तीनों है लार।
चारों अन्तः करण ये चित मन बुद्ध अहंकार॥

भजन राग छन्द जकड़ी

तुम योग युक्त चित धार के, अब काया नगर को देखो ॥टेर
अष्ट कमल अष्ट कुम्भ, अष्ट योग अष्ट साध।
दस मुद्रा दस इन्द्र, ओम् नाम ले अराध॥
दस पवन कब्जे कर, प्रकृति ले इनके बाद।
दसवें माहीं ध्यान धर, सुनेगा तू दसों नाद॥
कूड़े माहीं लाल छुपो, वहीं तुझे रहे लाद।
रोग निद्रा दूर होय, दूर होय पर माद॥
वही पद पाया आका, अन्त होय नहीं आद।
जीव जेल फंस रहा, यह भी हो जाय आजाद॥
सब कर्म भ्रम को मार के, फिर छुट जाय यम लेखो ॥१

अष्ट जोड़ छः चक्कर, नौ सौ ही नाड़ी जाल।
सात द्वीप नव खण्ड, चौदह लोक यही जान॥
सात ही समुन्दर जामें, इक्कीस स्वर्ग पिछान।
चार अन्तःकरण यामें, मन है बड़ा शैतान॥
अमी रस कुण्ड भरा, वाही में जा करले पान।
गंगा जमुना बह रही, जा ही में जा कर स्नान॥
वर्ण आश्रम तोड़ छोड़, कुल कुटुम्ब कान।
अखण्ड समाधी धार, भूल सब देही भान॥
जब सम दृष्टि शुध धार के, सर्व एक आत्मा पेखो ॥२
पांच कोश पांच देह, पांच ही हथियार देख।
पांच दासी पांच फांसी, पांच ही क्लेश पेख॥
पांच सयानि तीन नारी, तीन ही कर्म लेख।
साच वस्तु सत्य जान, झूंठ को दे दूर फेंक॥
तीन काल तीन ज्ञान, तीन ही अवस्था शेख।
विवेक वैराग्य आदि, साधनों से मन को टेक॥
कई कई मत चले, कई चल रहे भेख।
सबके गुरु बिना दूर, होय नहीं यम रेख॥
तन मन धन गुरु पे वार के, सब काम क्रोध को फेंको ॥३
सत गुरु दया कर, यह संग हमें दीनी।
श्रद्धा राख शरण जाय, प्रेम कर हम लीनी॥
वही मन चित धार, काया गढ़ लिया चीनी।
श्रुति स्मृति मिति, या को पकड़ एक कीनी॥
विषय त्याग एक हरि, नाम रस बूटी पीनी।
गुरु सम ज्ञान जामें, रहूँ सदा सम भीनी॥
सच्चिदानन्द गुरु देव, चादर ओढ़ाई झीनी।
दास यूं 'गोपाल' नित, वाही में मस्त रहनी॥
गुरु मुख से वेद विचार के, मन ज्ञान अग्नि में सेको ॥४

भजन राग आसा व गौड़ मल्हार

साधो भाई पोल में ढोल बजावे ।
भेड़ बापरी गीदड़ सम जान्यो अपनी गावे ॥टेक
माया मोह महल बन बैठे, साधु संग नहिं भावे ।
केल को छोड़ बबूल को पकड़े, भव जल गोता खावे ॥१
ले तंबूरा गायन गावे, परा बोल चिल्लावे ।
माया मेहरो की सुध नाहीं, झूंठी बात बतावे ॥२
बाणी करे अर्थ नहीं जाणें, पल साधु ढिग आवे ।
सन्त यथार्थ अर्थ बतावे, सो तो मन नहीं भावे ॥३
सांची बात सन्त जब कहे, भेड़ बादि भड़कावे ।
सिंह केसरी गर्जन लागे, गीदड़ खोज ना पावे ॥४
सांचे गुरु बिना भ्रम न जावे, गुरु बिन गुरु कहावे ।
दास 'गोपाल' कहे भाई साधो मूर्ख नजर नहीं आवे ॥५

भजन राग आसावरी

साधो भाई गो सिंह को खाया, मोय अचम्भा आया ॥टेक
चिड़िया जाय बाज को झपटा, अग्नि माय झुकाया ।
लागत अग्नि शीतल हो गया, बार-बार सुख पाया ॥१
मछली उलट कीर को पकड़ा, लोना जाल फंसाया ।
खाकर मांस मगन भई मछली, कीर मेरे मन भाया ॥२
उस मछली के पुत्र जन्मिया, रूप रंग बिन काया ।
निर्भय होय रहे सब जग में, काल को नाच नचाया ॥३
सच्चिदानन्द मिल्या गुरु पूरा, इन विधि मन समझाया ।
'दास गोपाल' गुरु कृपा से, उलट बोध कथ गाया ॥४

भजन राग आसावरी

साधो भाई सत गुरु अति कृपाला ।
कर्म भ्रम सब दूर हटावे, मार शब्द का भाला ॥टेक

सत गुरु चरण शरण जब लागा, तब किया उजाला ।
अगम अगोचर खिड़की खोली, मोह इन का ताला ॥१
मोहे शुद्ध स्थित कीनी, फिर कर फिरती माला ।
ज्ञान ध्यान की गंगा बहती, चलत-साथ गुण वाला ॥२
जहाँ पर होय महर सत गुरु की, वह दे जाके ताला ।
काल जाल फिर व्यापे नाहीं, नहीं माया का चाला ॥३
गुरु गोपाल दया के सागर, पल में करे निहाला ।
'ओहरीराम' आतम जग जान्या, जैसे पानी पाला ॥४

भजन राग आसावरी

ऐसा मेरे गुरु सम नजर न आया ।
चार खूंट और तीन लोक में फिर-फिर चक्कर खाया ॥टेक
भेद भ्रम में भटकत मुझको, गुरु गोपाल जब पाया ।
पूर्व जन्म की प्रीत पिछाणी, सोता आन जगाया ॥१
शान्तिस्वरूप दया के सागर, कृपा सिन्धु पाया ।
पर उपकार जीव भव तारण, मानुष तन प्रकटाया ॥२
गुण युत विद्या सदन उजागर, ब्रह्मनिष्ठ आप कहाया ।
प्रतिपाल नाथ नित जानो, तारन जहाज कहलाया ॥३
गुरु गोपाल पाया मैं जब से, ज्ञान गंगा में नहाया ।
'भूरा राम' कहे भाई साधो, ऐसा गुरु कर पाया ॥४

भजन राग गजल ताल ३

मिल सांवरा बिहारी, मुझे आस तेरी भारी ॥टेर
माता पिता तज साथी, सुत बन्धु नार नाती ।
तज संग के संगाती, लगी आस तेरी भारी ॥१
प्रीति जगत की झूंठी, मेरी आस इनसे टूटी ।
हरि नाम की पी बूटी, मैं आन के सुखकारी ॥२
दे दर्श का प्याला, होय ज्ञान का उजाला ।
टूटे भ्रम का ताला, हरो चिन्ता को यह सारी ॥३

दर्शन सभी में पाया, गोपाल गुरु ध्याया ।
आनन्द 'सुखा' को आया, मुझे आ मिले मुरारी ॥४

भजन राग बहर झकड़ी

हलकारा बड़ा सरकार का, क्या नींद नचीता सोवे ॥टेर
मोह लो माया में प्यारे, प्रभु जी को गया भूल ।
ऐसा तो व्योपार किया ब्याज में डुबोया मूल ॥
बन्दगी किया तो तेरे, सिर में पड़ेगी रे धूल ।
मेरी मेरी करता तूने, भूल के करार पाया ॥
एक दिन ऐसा आवे, काल का बाजे नगारा ।
पकड़ लेजा जम तेरा, धड़ से करदे शीश न्यारा ॥
मिलान–क्या चले न थारी नार का, क्या पल्ला पकड़कर रोवे ॥१
प्रभु जी को गया भूल, जिन्होंने रची है काया ।
पांच रे तत्वों से, यह शरीर बना आया ॥
गर्भ अति बीच प्यारे, बहुत कष्ट दुख पाया ।
तज दे मेरी मेरी अब, चलने की करलो सलाह ॥
हाथ पैर पसार चालो, साड़ चालो चाहे पल्ला ।
माया में न कौड़ी लेनी, हाथ में न छोड़े छल्ला ॥
गेरेगे चिता में जब, कुटुम्ब मचावे हल्ला ।
मिलान–बिन गया पलंग निवार का, काई को सेज बिछावे ॥२
टूटी सी टपरी में प्यारे, सूता पड़ा था कंगाल ।
सुपने माहि राजा हो गया, बहुत पाया धन माल ॥
हाथी घोड़े बहुत देखे, पल माहि हो गया निहाल ।
पराई विभूति देखी, देख कर बजावे गाल ॥
नैन खोल देखन लगा, चूल्हा में न पाई राख ।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, रुपिया जोड़े कई लाख ॥
मिलान–फंस मोह माया परिवार में क्यूं बीज बदी का बोवे ॥३

मनखा देही रे बन्दा, मिलती नहीं बारम्बार ।
जीती बाजी क्यूं खोते हो, कर चालो उपकार ॥
भव सागर की चौड़ी धार, उतर चालो परली पार ।
कहे 'सुखी' ब्रह्मचारी, यह है तेरी ही चीज ॥
छः सौ इक्कीस हजार, स्वांस है जो निज रोज ।
इतना ही जाणू, कैसे जीतो यमपुर ।
मिलान–तेरा आ गया दिन इकरार का, क्यूं कागज को खुलवावे ॥४

दोहा

दान करा था नाथ ने तीनों लोक लुटाय ।
पल्ले कौड़ी रखी नहीं देवों को दिया बंटाय ॥
दान दिये धन ना घटे नदी न घटे नीर ।
अपनी आंखों देख ले यूं कहते दास कबीर ॥

भजन राम टेक व छन्द पारवा

नर क्या कारण आया था, इस मनुष्य जन्म संसार में ।
क्या लक मारण आया था ॥टेक
न कोई जग में कूंवा बनाया, न कोई ब्राह्मण साध जिमाया ।
गरीब लुटा उजाड़ में, क्या बांध पोट लाया था ॥१
वेद किताब सुणी नहीं गीता, रह गया मूर्ख अनाड़ी रीता ।
संग चल्यो नहीं जाय, पीसों से भया पलीता ॥२
एक दिन पकड़ ले जावे जालिम, खड़ी तमाशा देखे आलम ।
त्रिया रोवे संसार में, पति बांध मोह लाया था ॥३
एक दिन तुमको जाना पड़ेगा, बीता हाल सुनाना पड़ेगा ।
गुरां के शरणे जाय के, यूं 'सुखीराम' गाया था ॥४

भजन पद राग हरियाणा

नर तेरा चोला रतन अमोला विर्था खोवे मत न ॥टेर

भाई तेरी देह बनी है नर की, भक्ति करले न ईश्वर की।
गुड बुड भूल गया उन घर की, प्रभु न भूले मत न ॥१
भाई तेरी पहले की करणी है, यहां अब होगी तुमको भरणी।
[illegible] में भी है करणी, विपत में रोवे मत न ॥२
देवे ऋषि मुनि फिकर में, फंस रहे माया के चक्कर में।
[illegible] काल फांसी टक्कर में, इसे छिटोवे मत न ॥३
'कबरी' बांध कमर होजा तगड़ा, यह सब झूठा जग का झगड़ा।
[illegible] पड़ा मुल्क का रगड़ा, काफिर होवे मत न ॥४

भजन राग कसूरी ताल

नहीं मानता है जग अन्धा देखो जड़ राख्या फन्दा ॥टेर
माल माल नर मुर्ख अन्धा क्यों गरब्यो नर मंदा।
धन जोबन तेरा यूं छिप जावेगा ज्यूं बादल में चन्दा ॥१
जीवन मरण सदा नित परले, अरहट माल फिरन्दा।
[illegible] प्रभु भजन न फिर होवेगा मोल माल का धन्धा ॥२
[illegible] कुटम्ब कबीला कोई न लावे सन्धा।
[illegible] का चमत्कार है क्यूं छावत है छन्दा ॥३
श्वासों श्वास सांस न बिसरे हुक्म नाम जपन्दा।
भूल्यो फिरे भ्रम को मारियो कहे 'बिहारी बन्दा' ॥४

भजन आरती

आरती कीजे सुन्दर वर की ॥टेर
नन्द किशोर यशोदा नन्दन, नागर नवल ताप तम हर की ॥१
वन विलास मृदु हास मनोहर, श्रवण सुधा सुख मोहन करकी ॥२
'बिहारी दास' लोचन चकोर नित, अंस प्रिया भुज धर की ॥३
दोहा—निराकार निर्वाण का नहीं पाया है किसी ने अन्त।
वेद शास्त्र थकित भये कहते साधु सन्त ॥

भजन राग खड़ी चाल

घट हर घट हर गगन गर्जे रहा सोहं सोहं है [illegible] ॥टेर
अगड़ बम्ब अगड़ बम्ब बाजे नगारा ओंकार का घर न्यारा ॥टेक
रंग महल में देखले अकथ निराकार एक [illegible]।
सोहं शिखर पर अटल जोत है पहुँचेगा हर को प्यारा ॥१
धन कारीगर तेरी कीमत का पार न पाया किन यारा।
सभी काल में ब्रह्म वरण दिया चेतन कर दिया पं [illegible] ॥२
अटल तखत पर औघड़ [illegible] निराकार एक निरधारा।
सूरत न मूर्त न रूप न देखा एक रंगी सब से न्यारा ॥३
'जालिम गिरि' सतगुरु के शरणे में चेला तुम गुरु म्हारा।
ममता मार भरम गढ़ तोड़ा जीत लिया जम का द्वारा ॥४

भजन

मेरे सत गुरु जैसा बिरला न पाया।
बाहर भीतर भटकत क्या डोले सत गुरु आन [illegible]
गौरी पुत्र गणेश मनांवा, रिद्ध सिद्ध भरे [illegible]।
चोरी चोरी फिरत महल, मैं खोजो न [illegible] पाया ॥१
जरी मसाल संग लिया, खोजा [illegible] वेद मिलाया।
[illegible] दरवाजा बंधा दशवें, खोजो ने खोज निकाला ॥२
हुई आवाज नगर सब उलटा, लोग तमाशे आया।
सीढ़ी लगा कर ढूंढन लाग्या, राम नाम लव लाया ॥३
[illegible] गया ब्रह्म देव सब दर्शा, सुन्दर रूप दिखाया।
[illegible] विवेकी देखन लाग्या, एक अनुभवी ध्याया ॥४
मूल चक्कर पर शोधन बैठा, गंध सुगन्ध मिलाया।
दोउ कर जोड़ 'माली शोभो' गावे, गुरु रामलाल पाया ॥५

भजन

क्यूं भूल्यो नर सरजन हार, अब छोड़ जगत की लार ॥टेर

गर्भवास में कौल किया था, भजन करन का वचन दिया था।
दुखित के हित जन्म लिया था, बिगड़ गयो सब कौल करार ॥१
बाल समय बालक संग लाग्यो, जवान भयो धन के हित भाग्यो।
विषभर निद्रा में नहीं जाग्यो, सिर पर धर्यो कुटम्ब को भार ॥२
वृद्ध भयो तब गर्दन हाले, सब ही बारे लैर के साले।
तो भी मुख से राम न बोले, हाय हाय कर रह्यो पुकार ॥३
बाल युवा वृद्ध तीन बताई, अब चलने की लग गई बाई।
कई 'पुजारी' बिना कमाई, बहुत पड़ेगी जम की मार ॥४

भजन

कोई जन मस्ताना जिन पाया पद निर्बाना ॥ टेर
मग्न होय चढ़ गये गगन को, अधर धार धर ध्याना।
लगन लाय बिसराय विश्व को, अनहद शब्द पिछाना ॥१
सोलह कला से चन्द्र प्रकाशा, सहस कला से भाना।
जगमग लगी महल के भीतर, देखे दर्श दिवाना ॥२
प्रेम शून्य में परचा हुवा, चेतन चरण समाना।
निर्गुण सैज तेज की नगरी, वह अवगति स्थाना ॥३
खिल गये कंवल गगन बरसाये, नित्य प्रति अमृत पाना।
अमर कंद सब बन्धन त्यागे, जिस घट भ्रम भगाना ॥४
पांच पच्चीस सभी तज भागी, जीत लियो मैदाना।
'नित्यानन्द' गोविन्द गुमानी, अब निश्चय करि जाना ॥५

दोहा

जीव ब्रह्म दोऊ एक हैं, कहते वेद पुरान।
वही खुदा वही अल्लाह है, वही राम भगवान् ॥

भजन राग बसन्त बहार

मन तू क्यूं पछतावे रे, सिर पर श्री गोपाल बेड़ा पार लगावे रे।

निज चरणों की आस करो जब जीव घबरावे रे।
जांकी महिमा सुन सुन चित में धीरज आवे रे ॥१
जो कोई तन मन से हरि को ध्यान लगावे रे।
वाके घर को क्षेम हरि आप निभावे रे ॥२
जो मेरा अपराध गिनो तो अन्त न आवे रे।
ऐसो दीन दयाल चित पर चूक न लावे रे ॥३
तीन लोक को नाथ लाज हरि नाहि गमावे रे।
पतित उधारण बिरद वाको वेद बतावे रे ॥४
दीन गरीब के काज बिरद वह नहीं लजावे रे।
महिमा अपरम्पार तो सुरनर मुनिजन गावे रे ॥५
ऐसो 'नन्दकिशोर' भक्त को काम बिटावे रे।
तू मत होवे उदास भक्त की ओड़ निभावे रे ॥६
झूंठा तज अभिमान भजन में चित्त लगावे रे।
कानूराम भंवर से साहिब पार लगावे रे ॥७

भजन राग छन्द पारखा

महा शून्य कमल कैलाश में एक जती पुरुष होता है ॥ टेर
गंगा जमुना सरस्वती तीन नार उसके घर बसती।
बिना इन्द्री करे गृहस्थी,, मौसम बारह मास में ॥
खिन सुख हंसता रोता है ॥१
सत्तर बहत्तर संग में दासी, लिये फिरे मत समझो हांसी।
तू जो इनको करे तलाशी, पावे गहरे आकाश में ॥
जहां ब्रह्म चक्कर सोता है ॥२
निर्गुण झूल पड़ी तरुवर में, सगुण होय झूले सरवर में।
नदी पालणा पड़ी अम्बर में, भूमी जमी आकाश में ॥
मुझे सुन अचरज होता है ॥३

महादेव न शिव कैलाशी, न विष्णु हृदय के वासी।
कहे "ऋषि सम्मन उदासी, रहता जंगल बीयाबान में॥
ना गुरु पिता पोता है ॥४

स्तुति

गुरु स्तुति मेरे जन भाई, सुर नर मुनि मिल के गाई।
गुरु बिन धर्म करे सो धोका, सोच समझ कर देखो मौका॥
गुरु भ्रम न शिष्य कोउ कहावे, कच्चा से हंस गुरु बनावे।
वेद ग्रन्थ सब शास्त्र सुनावें, गुरु मिले तो ब्रह्म दिखावे।
मथुरामजी सत गुरु पाई, 'नानक राम' स्तुति गाई॥
हम पर हरि की कृपा कीजे, पाप कर्म मेरा सब हर लीजे।
हम नालायक आप हैं लायक, आप कृपालु सर्व सुख दायक॥
हो दयालु दया कर दीजे, भव सागर से पार कर दीजे।
यह स्तुति सुन हरि करतारा, 'नानकराम' जान जन तेरा॥

हरि कीर्तन

जय जय तोता राम मुख से बोलो रे ॥टेर
बड़े भाग्य मानुष तन पाया, सुर दुर्लभ सद ग्रंथन गाया।
राम भजन करा सुमरिन बाधा, तज दे खोटे काम॥
व्रिथा मत डोलो रे ॥१ जय जय०
राम नाम है रत्न अनमोला, एक रत्ती और बावन तोला।
सन्त जनों ने खूब टटोला, पूर्ण करदे काम॥
हृदय बिच तोलो रे ॥२ जय जय०
अष्ट प्रकार काम को त्यागो, भगवत भक्ति में नित लागो।
सोये बहुत दिन अब तो जागो, कौड़ी लगे न दाम॥
तैयार तुम होलो रे ॥३ जय जय०

[illegible] धर्म आश्रम का राखो, मुख से झूठ कभी न भाखो।
[illegible] गांव और नगर नगर में, बने 'रामजन' धाम॥
जाय पाप को धोले रे ॥४ जय जय०

भजन

[illegible]भु ने कैसी रेल बनाई ॥टेक
[illegible] की गाड़ी मन का इंजन क्रोध की आग जलाई।
[illegible] रुधिर अपार भरियो है मन के वेग से आई॥
श्वास की सीटी बजाई ॥१
[illegible] खबर तार देने को चहुं ओर फैलाई॥
[illegible]न्द्रियन के बने हैं स्टेशन ज्ञान की घण्टी बजाई॥
धर्म की खूब लदाई ॥२
[illegible] युवा वृद्ध तीन हैं दर्जे नम्बर से बैठाई।
[illegible]र्म अकर्म को टिकट बटत है पाप पुण्य पहुंचाई॥
सुनिए कान लगाई ॥३
[illegible]ीवन आनन्द' बैठ्यो इसमें अपनी टिकट दिखाई।
[illegible]ने वाला यह जगदीश्वर जिसने यह रेल बनाई ॥४

भजन

[illegible]र्म मत हारो रे जग में जिन्दगी है दिन चार ॥टेर
[illegible]ाम लोक से चलकर आया, पल्ले खर्चौं कुछ नहीं लाया।
[illegible]हां आकर गढ़ कोट चिनाया, यों ही जाता है संसार ॥१
[illegible]मराज के जाना होगा, सारा हाल सुनाना होगा।
[illegible]र पीछे पछताना होगा, करलो न सोच विचार ॥२
[illegible] तो चेत करो मेरे भाई, तैंने व्रिथा उमर गंवाई।
[illegible] धोके काया लुटवाई, भज राम नाम है सार ॥३
[illegible]र-बार सतगुरु समझावे, मनख्या जन्म बहुर नहीं पावे।
[illegible]ा वक्त फिर हाथ न आवे, यो 'जीवन' कहे हर बार ॥४

भजन

जिन्दा रहकर या मर मिटकर,

हम तुमसे मिलेंगे कभी न कभी ।टेर

आखिर हम आंखों वाले हैं, तुम्हें देख ही लेंगे कहीं न कहीं ॥

लाखों ही तुम पर मरते हैं, हम तेरे प्रेम का भरते हैं ।

जो सौ-सौ इरादे करते हैं, एक बार मिलेंगे कभी न कभी ॥

परदे का न होगा नाम कहीं, बन जायेंगे बिगड़े काम सभी ।

तुम बात करोगे कहीं न कहीं, हम बोल ही पड़ेंगे कहीं न कहीं ॥

काशी न सही मथुरा में सही, काबा न सही बुतखाना सही ।

अगर हम सच्चे आशिक हैं तेरे तो ढूंढ ही लेंगे कहीं न कहीं ॥

आफत देखी और गम देखा, गंगा देखी जमुना देखा ।

राम जब तुम हमसे मिलते नहीं, हम डूब ही मरेंगे कहीं न कहीं ॥

दाना न सही नादान सही, अमीरी नहीं तो फकीरी सही ।

जिन्दा रहकर या मर मिटकर,

'जीवन' तो मिल लेगा कभी न कभी ॥

कुण्डलिया छन्द

पार ब्रह्म परमात्मा पूरण विश्व अनूप ।
नमो चराचर जीव सब राव रंक जग भूप ॥
राव रंक जग भूप आप त्रिलोकी दाता ।
लई आपकी शरण धर्म नीति कहूं गाथा ॥
कहे जीवन कविराय यूं तूही विश्व अधार ।
तेरी कृपा से लगे जीवन नैया पार ॥१

शब्द गुरु का सत्य है कभी अन्त न होय ।
शब्द पारखी परखते दिल का धोखा खोय ॥
दिल का धोखा खोय होय आनन्द हमेशा ।
नाशे विघ्न अनेक नाशे सर्व कर्म कलेशा ॥

कहे जीवन कविराय करले दर्शन हरी का ।
परसे मुक्ति होय सत्य है शब्द गुरु का ॥२

मन की चाल कुचाल है लखिए मन की चाल ।
छिन में मन राजा करे छिन में करे कंगाल ॥
छिन में करे कंगाल बड़ो ऐसो मन पाजी ।
छिन में चढ़े तुरङ्ग लड़े जोधा की बाजी ॥
कहे जीवन कविराय चाल जो चले पवन की ।
छिन में मुक्ति होय जीते जो बाजी मन की ॥३

धन की तृष्णा जगत में दिन-दिन दूनी होय ।
सौ होवे तो सौ करे चहे हजारों होय ॥
चहे हजारों होय होय बोझा दिन राती ।
खाय न खर्चे सूम अन्त संग में नहीं जाती ॥
कहे जीवन कविराय लगन कर हरि भजन की ।
कर मन में सन्तोष झूंठी तृष्णा तज धन की ॥४

भजन राग गजल

निराली शान तेरी है, निराला तू खिलारी है । टेर

रचाया विश्व सब तुमने, रचाई चारों खानी को ।
सर्व शक्ति में तू व्यापक, तू ही जग प्राणधारी है ॥१

पड़ी जब भीड़ भक्तों पर, पधारे पांव नंगे ही ॥
बचाया डूबते गज को, ग्राह जल में पछारी है ॥२

सभा में द्रोपदी टेरी, बढ़ाया चीर तुमने ही ।
कौरवों का मान भंग कीना, हारे अन्यायकारी है ॥३

ध्रुव प्रहलाद प्रतिज्ञा, अनेकों जन की तुम राखी ।
जीवन हरि नाव निज जन की, सदा तुमने उभारी है ॥४

दोहा

सुमिरन से मन लाइए जैसे कामी काम ।
एक पलक बिसरो मती निशदिन आठों याम ॥

दुख में सुमिरन सब करे सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करें तो दुख काहे को होय ॥

दोहा

जीव ज्योति है मनुष्य में तब तक सम्बन्ध जान ।
जीव ज्योति जाती रहे नहीं सम्बन्ध सम्मान ॥
दुर्लभ मानुष जन्म है पावे न दूजी बार ।
पक्का फल जो गिर पड़ा लगे न दूजी बार ॥

दोहा

तीन नाम है ब्रह्म का सोहंग सोहंग राम ।
इष्ट भेद कर जपत है न्यारा-न्यारा नाम ॥
ज्ञानी सोहंग कहत है योगी कहत ओंकार ।
भक्त कहत है राम ही तीनों एक विचार ॥
सुरति निरत को एक कर पहुँचे सोहन शिखर ।
नगर मगर वहाँ हो रही करते संत बसर ॥

भजन राग जोगिया ताल

कर लिया भगवां भेष छोड़ दिया देश भरथरी ज्ञानी ।
तज दिया राज और पाट पिंगला रानी ॥टेक
एक तपसी सभा में आया, वह हाथ अमरफल लाया ।
राजा को करे प्रणाम होय आधीनी ॥१
यह फल देवों से पाया, ले राज काज में आया ।
इसे खायेगा उसकी होगी अमर जिन्दगानी ॥२
राजा ले फल महलों में आया, फल रानी के मन भाया ।
रानी ने राखी बात मन में छानी ॥३
रानी नौकर को फल दीना, नौकर यह कौतिक कीना ।
फल वेश्या को जा दिया खावो मेरी रानी ॥४

वेश्या ने किया विचार मैं कितनी अधम हूं नार ।
यह फल राजा के काबिल है लासानी ॥५
कुछ पांच पच्चीसों नार किया सिणगार बधावा गाया ।
यह फल राजा को जाकर भेंट चढ़ाया ।
राजा को यह फल देख हुई हैरानी ॥६
राजा को हुआ वैराग फकीरी धारी,
साहिब मिलने की मन में बात बिचारी ।
राजा दई जगत को पीठ भजन चित ठानी ॥७
वह हुआ गुरु का चेला बांध लिया बेला,
उसका मन मन्दिर में हुआ साहिब से मेला ।
यह गावे 'ओबाराम' भावपुरा ग्राम अमर ये बानी ॥८

भजन बारामासी राग सोरठ

[illegible] दे दर्शन भगवान् जीव म्हारो क्यों तरसावे रे ।
[illegible] बिन दर्शन नहीं चैन बिरहन बहुत सतावे रे ॥ टेर
[illegible]त वत्सल प्रभो आप हो सबका सरजन हार,
[illegible] जन शरणे गये तुम्हारी सहज हुआ भव पार ।
[illegible]र जम डाण चुकावे रे ॥१
[illegible] से चेतन भया खुलिया नैन विचार,
[illegible] जल बहता जोवड़ा हरि से करे पुकार ।
पार भव धार लगावे रे ॥२
[illegible] में बिसरु नहीं पलकां रहा निहार,
[illegible] तो दर्शन देय दे नहीं मरूं कटारी खार
और दिल धीर बन्धावे रे ॥३
[illegible] महीना लागिया झट पट लागी डोर,
तुमरूं नित पीव को जग ध्यावत है और ।
और ना मेरे मन भावे रे ॥४

आषाढ़ महीना लागिया और सब बांधिया धीर,
तन जामें पिण्ड रोग है तुही जाने मेरी पीर।
दूजो कोई भेद न पावे रे ॥५

सावन महीना लागिया तीजां भया त्योहार,
जग सुणत को जात है हिवड़ो करे उजार।
धार अमृत की चूवे रे ॥६

भादों महीना लागिया बी बादल का जोर,
जल हल चमके बीजली गर्ज रह्यो घन घोर।
सारे मोर नृत्य दिखावे रे ॥७

आसोज महीना लागिया आस लगी भरपूर,
दे दर्शन विपता हरो करो कल्पना दूर।
उर में आनन्द बढ़ावे रे ॥८

कातिक महीना लागिया कन्त मिलन का जोग,
दीप दीवाली त्योहार है भाग गये सब सोग।
रोग अब नहीं सतावे रे ॥९

मंगसिर महीना लागिया मंगल गाऊं रोज,
जग जंजाल में लगाऊं खोज।
सांवरो कहीं तो पावेरे ॥१०

पोष महीना लागिया जाड़ा पड़े विपरीत,
लग आवे लख जावते यही जगत की रीत।
अमर कोई नहीं कहावे रे ॥११

माघ महीना लागिया महर भई गुरु मांई,
भेद मिटे भ्रम का हरि हमें दिया बीताई।
सर्व सुख जाल समाये रे ॥१२

फागुन महीना लागिया फरक रहा कुछ नाहीं,
अब फगवा लेवूं कौन से दूजो दरसे नाहीं।
शब्द यह 'जीवानन्द' सुनावे रे ॥१३

भजन राग चौपाई ताल संवाली

मिले धरी तीन भरपूर किला मेरा किल किट ढहूंगा ॥टेर
अभिमान राज बलकारी, संग में मोह दल फौजधारी।
घर घर मार मचाई भारी, झंडा जिन पद का रोपूंगा ॥१
काम दल फौज किला के माहीं, कर्म बादशाह की फिरे दुहाई।
सबको दिया छिन में भगाई, किला अब पलमें तोड़ूंगा ॥२
इस विधि किला तोड़ दिया चकचूर,
अभयकीर्ति का लगा दिया डंका।
काल बली की मेट दी शंका निसान भय का फोड़ूंगा ॥३
भदुराम जी सत गुरु पाई, 'जीवादास' यूं कथके गाई।
चौदह लोक पर चक्कर चलाई, पता अब सबका तोड़ूंगा ॥४

दोहा

और ज्ञान सब ग्यानड़ी, आतम ज्ञान सो ज्ञान।
जाको आत्म की परख हुई सोही ब्रह्म समान ॥

भजन राग आसावरी

साधो भाई गुण लटका निर्गुण का।
जो तू भेदी होय निर्गुण का करो अर्थ अक्षर का ॥टेक
सत लोक पर चार धाम है नाम बताना उनका।
एक फूल मूल चार कहिये करो अर्थ अक्षर का ॥१
अगम पुरी के चार चरण हैं नाम बतावो उनका।
अनहद की तो माता कौन है पिता बतावो उनका ॥२
बिन पिण्ड का पुरुष कहिये श्वास बिना अक्षर का।
पहले मेरा उत्तर देना पीछे करना गुटका ॥३
साज बाज तो यहां रख देना करो अर्थ वाणी।
'जीवाराम' का प्रश्न चार है मेटो इनकी शंका ॥४

श्री रामदेवजी के भजन

हालो म्हारा मायड़ा नकार म्हारे घर हालोनी ।
थारी गेरी करूं मनुहार म्हारे घर हालोनी ॥ टेर
भेज बुलाऊं भूरड़ी जी, थाको मुहली रंधाऊं खीर ।
म्हारे घर हालोनी ॥१॥ हालो म्हारा०
चावल रंधाऊं उजलाली म्हारे नहीं छे बाजरी रो खान ।
म्हारे घर हालोनी ॥२॥ हालो म्हारा०
कसरा ढोलूं धणी बीजणा जी थारे तुल तुल लागूं पांव ।
म्हारे घर हालोनी ॥३॥ हालो म्हारा०
'हरजी भाटी' री विनती थी थे म्हारा मायर बाप ।
म्हारे घर हालोनी ॥४॥ हालो म्हारा०

भजन राग मांझ गजल ताल

बाऊं मैं राम रूणीचा में मेरो मन लाग्यो मेला में ॥ टेर
पिछम धरां को पूजूं राम दे धूप खेऊं धूपेड़ा में ॥१
भगत उभारण कारण जग में प्रकट भयो रूणीचा में ॥२
राखस मार बाबो भोम बसाई ईंत पगाड़ो थलंका में ॥३
बादल मर बणजारो आयो कुण बणां दियो गूणां में ॥४
बाई बदका को मर गयो बालको ऊंने जीवा दियो गोरियां में॥५
डूबत जहाज बांणया बोयता को त्यारो हाथ पसारो समुन्दर में॥६
शरण पड़े का सब दु:ख मेटे दया धारो है बाबो कलजुग में ॥७
'जीवादान' अलख थारे शरणो ध्यान धरूं मन मन्दिर में ॥८

भजन तर्ज—खंमा खंमा

खमा खमा खमारे भक्त सब त्यारो निकलंक नेजा धारी जीओ॥टेर
तंवरा न त्यारा डाली बाई ने त्यारी, त्यारी रूपां दे रानी जीओ॥१
सोढां न त्यार सोढाणी ने त्यारी, सोढा भाग सवायो जीओ ॥२

हरजी न त्यार बोयता ने त्यारी, त्यारी खाति स्वामि जीओ ॥३
बदबदल त्यार लाखजा ने त्यारी, प्रजा अनन्त गुणाया जीओ ॥४
धाम भावपुरा प्रकट कीनो, हरि भक्ति फैलाई जीओ ॥५
'जीवदास' को त्यारण कारण, चरण सेवा फरमाई जीओ ॥६

भजन राग मांझ व मेवाड़ी

वाला अजमल घर अवतारी जी ।
कलजुग मांही घर घर भक्ति फैली थारी जी ॥ टेर
राम होय रावण ने मारियो, विभीषण त्यारी जी ।
केश पकड़कर कंस पछाड़्यो, कृष्ण मुरारी जी ॥१
द्वारका से आप पधारिया, अलख नीजारी जी ।
अजमल जी की आशा पूरी, भव से त्यारी जी ॥२
राजा सुमरे प्रजा सुमरे, बारम्बारी जी ।
सुमरे ज्यां का संकट मेटे, भक्त बिहारी जी ॥३
संकट मेटो दोष निवारो, पर उपकारी जी ।
'जीवाराम' शरण में थारी, अर्ज पुकारी जी ॥४

दोहा

थे म्हारा माता पिता रावत रामा पीर ।
मान दियो मोटो कियो पड्यो समुन्दर सीर ॥
हरजी हरी का नाम को जपता अजपा जाप
सुर नर देवांको बन्दगी मारे धणी की छाप ॥

भजन राग लावणी व कव्वाली

अब तुम दया करो श्री रामदे, अजमल के कहाने वाले ॥ टेर
अजमल जी ध्यान लगाया, समुन्दर में दर्शन पाया ।
बचनों का बंधिया आयाजी, अवतार कहाने वाले ॥१

राजा दशरथ ने महलों बुला कर, सार दई कूटी।
राम लखन को बन को मिलाया, दशरथ देह छूटी ॥२
सीता जी ने रावण लेगो, जब आगी उगली।
सारा कुटम्ब को नाश करायो, जब लंका छूटी ॥३
लक्ष्मण जी के बाण लगो, जब संजीवन लाई बूटी।
'अमरदास' को आई बीनती, चौरासी छूटी ॥४

भजन राग सागर पारखा छन्द

मत भूले नाम हरी का, दुनिया से नेह लगाया के ॥टेक
गर्भवास में भय दुःख पाया, बचन कबूल बाहर को आया।
मूर्ख वृथा जनम गमाया, महल मकान बनाय के ॥
सुख भोगे सहज परी का ॥१
गुरु चेला और साहा करोड़ी, बिछड़त देखी सब की जोड़ी।
काल बली ने गरदन तोड़ी, इस दुनिया में आय के।
बस चला न मरद बली का ॥२
जोग जुगत हम करता देखा, सांस कपाली में धरता देखा।
आखीर सबको मरता देखा, तजे सुख धातु प्राण को।
जैसे पड़ा सुआ नगरी का ॥३
तीन पहर घर धन्धो करले, एक पहर हरी ने सुमरले,
भव सागर से पार उतरले, कहे 'पुजारी' गाय के।
फिर डरो न खोड़ मरी का ॥४

भजन राग आसावरी

सन्तो माया तजी न जाई, नारी तज त्यागी कहलावे।
मानुष बुद्धि न पाई ॥ टेक
मैथुनादि षट धर्म देहन के, सो कैसे छुट जाई।
देह रहे तक सब में बरतें, समझ देख मन माहीं ॥१

पुत्र पुत्री तज साधु होय, सब फिर उपाधि बन जाई।
जो चेला चेलीन की उपाधि में, सहज सहज फसजाई ॥२
इसने धन की आशा छूटी, उन चेलन की उर आई।
घर तज के मठ गुफा बनावे, गृहस्थीन के घर जाई ॥३
त्याग पदार्थन को नर करते, पुनः आसक्ति हो जाई।
बिना आसक्ति त्यागे कैसे, मन में समझत नाहीं ॥४
गृहस्थ विरक्त को मर्म न जाने, भ्रष्ट भया जग माहीं।
'अखंडानन्द' होय फिर कैसे, भटक भटक मरजाई ॥५

भजन राग आसावरी

अब हम मानुष धर्म विचारा, सर्वोच्च पद मनुष्य धर्म है,
सो हमने उर धारा ॥टेक
षट पशु धर्म सुधार किया सब, पशुता दीन निकारा।
दया मलीन विचार अरु धीरज, लक्षण नरके हैं सारा ॥१
धर्म ही लोक धर्म ही ईश्वर, धर्म ही योग हमारा।
आसक्ति रहित बरतु या जग में, उलछिट से हूं मैं न्यारा ॥२
धर्म से बरतु सदा या जगमें, धर्म से होय है पारा।
नर पुरुष मानुष पद ने छोड़, पावे मुक्ति द्वारा ॥३
धर्म धर्म सब ही चिल्लावें, धर्म का मरम है न्यारा।
'अखंडानन्द' खोजो या पद को, याही में सुख तुम्हारा ॥४

भजन राग बहर सलाई व राधेश्याम

ओ तू बात घमंड की करता, मेरा सुन प्रश्न बानो।
इस बानी का भेद बताना, समझो पूरा ज्ञानी ॥ टेक
प्रथम कहो एक क्या कहिये, दूजा कौन लगा है साथ।
तीजा त्रिगुण कैसे उत्पन्न, यह भी भेद बताना भ्रात ॥

चारों खानी चारों बानी चार अवस्था युग हैं चार ।
चार वेद पद अंतःकर्ण है, चार पदार्थ कहो समसार ॥
भिन्न करके भेद बताना, सहज ही मिटे ऐंचातानी ॥१
पांच तत्व रंग पांच कहीजे, पांच कोष का कहु विस्तार ।
पांचों मुद्रा बता कौनसी, पांच विषय कहो ततसार ॥
पांचों प्राण मुझे कहिजे, उप प्राण हैं पांच ।
सब प्रमाण अर्थ बतलावे, जब आवे मेरे मन सांच ॥
पांचों मुक्ति प्रकट जग में, कहो कौनसी तुम मानी ॥२
छः अंग वेद का कहिजे, छः भृकुटि छः विकार ।
छः लिंग और छः दर्शन हैं, और बताना छः आकार ॥
सात धात और सात समुद्र, सप्त भौम का करो बयान ।
सात सुन्य का भेद बताना, जो तू पूरा है विद्वान् ॥
जो तू भेदी है निरगुन का, तुम से बात नहीं छानी ॥३
आठ कर्म और आठ कमल हैं, आगे कौन बता भाई ।
नौ नाड़ी का बता ठिकाना, कहां रहती काया माई ॥
दस देवी और दसों देवता, दसों कहीजे दोय दुवार ।
कितनी अंग पर रोम कहीजे, और बताना आरमपार ॥
हद बेहद क्या वस्तु हैं, सन्त सुरत कहां पे तानी ॥४
ताल पपैया बाग बिन घोड़ा, ऐसे काम चले नाहीं ।
पहले इनका भेद बताना, तब आगे गाना गाई ॥
ताल खंजरी साज बाज, और चोतारा रखजा भाई ।
गाना बजाना बन्द तुम्हारा, सत्संग और मंडल्या माईं ॥
'जीवारामजी' प्रश्न करता, कितना पवन कितना पानी ॥५

दोहा

कौन ज्ञान का ध्यान है, कौन शब्द की धार
कौन पुरुष का देश है, कैसे करें दीदार ॥

विहंग ज्ञान को ध्यान है, सहज शब्द की धार ।
गगन पुरुष का देश है, सन्त करें दीदार ॥

भजन राग छन्द बहर जकड़ी उत्तर

धरके सुनो अब ध्यान, बानी का अर्थ बताऊं तोय । टेक
प्रथम आदि पुरुष ओंकारा, दूजी अंग माया भई न्यारा ।
माया में तीन गुण उपजाई, सत रज तम त्रिय नाम कहाई ॥
ब्रह्मा रजो गुण जान रचे हैं जहान, अर्थ यूं आता है ।
है सतोगुण भगवान्, सर्व पद भाया ॥
तमो गुण शिव होय, कहूं मैं तोये, मान इतबारा ।
माही से उत्पन्न प्रलय, सकल संसारा ॥
जो पिंड से भये प्राणी, वो पिंडज खानी मानी ।
जो अंडा से पैदा होई, सो अंडज खानी सोई ॥
जमीं से जंगम भई, उत्पन्न मेघ जल खार ।
जागृत सुपन सुषुप्ति तुरिया, भई अवस्था चार ॥
गुरु ने यूं समझाया मोय ॥१

ब्रह्म वाच परा भई बानी, ईश्वर वाच प्रसन्नता ठानी ।
माया वाच विखरी जानी, जीव वाच मध्यमा मानी ।
सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग चारा चारा ।
साम अथर्व ऋग् यजुर्वेद यूं चारा ॥
तत्व तम परम ऐसी पद प्यारा प्यारा ।
चित मन बुध अहंकार लिखो ये चारा ॥
अर्थ धर्म और काम, निज मोक्ष पदार्थ धामा ।
अब पांचों तत्व सुनाऊं, तेरा मन का भर्म मिटाऊं ॥
आकाश वायु तेज हैं चौथा नीर निहार ।
पांचवां तत्व पृथ्वी भई ऐसा अर्थ विचार ॥
यह गुरु से मालूम होय ॥२

शब्द स्पर्श रस रूप रस गन्धा, पांच जीव के यह है फन्दा।
अन्न मन प्राण ज्ञान आनन्दा, जाने हरिजन गुरुमुखी बन्दा।।
कहूँ पांचों मुद्रा का भेद मिटे सब भेद सुनो तुम साखी साखी।
है तिरक्या कमल पर खेचरी मुद्रा ठानी।।
अगोचरी स्थान समझने कान सुनो चित लाई लाई।
है भूचरी स्थान नासिका माहीं।।
मुद्रा चाचरी नेत्रा भाई, उनमुन ब्रह्माण्ड माहीं।
अब पांचों मुक्त सुनाऊं, तोय निज मत भेद बताऊं।।
समीप सालोक्या सायोज्या जीवन मुक्त विचार।
मुक्त बन्ध में जो नहीं वो तो इन से पार।।
वो निर्बन्धन निरमोहा ।।३

शिक्षा व्याकरण ज्योतिष है भाई, छन्द कल्प निरुक्त कहाई।
छऊ अंग वेद के गाई, छः दर्शन अब कहूं समझाई।।
सांख्य वैशेषिक मीमांसा भाई भाई।
और न्याय योग वेदांत सुनो चित लाइ।।
जप कर्म अभ्यास मोक्ष दरसाई दरसाई।
अर्थवाद अपूर्वा उत्पति पाई।।
अब छः भृकुटी गाऊं, भिन्न-भिन्न करके समझाऊं।
बनि बजे गोमती जानूं, हंस मुखी सांच कर मानूं।।
मकर मनी और शब्द मनी एक मन्दर तत सार।
मोटा पतला छोटा आदि यह हैं छउ आकार।।
यह अर्थ सतार्थ होय ।।४

सात समुन्दर सुनते आओ, अपने दिल में अर्थ जमाओ।
खार छार दधि घृत कहाई, दूध ईख सुरा सुन भाई।।
नाड़ी चमड़ी रोम मांस यूं आया आया।
रक्त बिन्द और हाड़ धात दर्शाया।।

आंख नाक मुख कान कंठ के माहीं।
यह जो नाड़ी का ठीक ठिकाना चाहीं।।
अब कमल आठ यह आया, षट मूल नाभ ठहराया।
और आठ कर्म है न्यारा, कोई जानेगा जानन हारा।।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, यह दिशा है चार।
नैऋत्य वायु ईशान अग्नि, यह कोन है चार।।
यह आठों कोन यूं होय ।।५

दस देवी दस पवना होई, दसों देवता कहूं अब सोई।
ब्रह्मा रुद्र और महादेवा, चांद सूरज और इन्दर देवा।।
वरुण अग्नि यमराज परजापत भाई भाई।
साढ़े तीन करोड़ है ये बदन पे भाई।।
हद माया जाल करो तुम ख्याल फसो मत कोई कोई।
है बेहद ब्रह्म विचार लिखो तत सोई।।
यह अर्थ किया तत सारा, कर दिल में धारण प्यारा।
नहीं मूर्ख के इतबारा, यह डूबेगा मझधारा।।
दया भई गुरुदेव को, मेटे तिमर अज्ञान।
'जीवाराम' निजस्वरूप में, सदा भया गलताना।।
यह पद पूर्ण छन्द अब होय ।।६

भजन तीन ताल ठेका

तुम साहब करतार हो, अन्तर्गत पाई।
निरगुण सुरगुण कैसे भई, निबला रहा बुझाई।।टेक
निज आत्म किस ठौर है, लिखता कैसे पाई।
चार खान में निज कौन है, ज्यां को कहो समझाई ।।१
उपजे मिटे फिर होत है, यह क्या है दुखदाई।
असंग जुग कैसे भया, निज काई में समाई ।।२
शुद्धस्वरूप कैसे भया, गम किस कर पाई।
निअक्षर कैसे भया, कैसे पारख पाई ।।३

[illegible] माया भाई, केवल कोल रहाई ।
'जगन्नाथ' आगे कही, निकली रहा बुराई ॥४

भजन राग तीन ताल ठेका

साधु तुम सबको कहो निशानी ।
बाप अबाप लिंग न सगुण नाही, किस बिध सुरत लगानी ॥टेक
धरती नहीं गगन नहीं था, नहीं था पवन और पानी ।
हिंदु तुरका का जनम नहीं था, तब की कहो सहनानी ॥१
सात समुन्दर अठकुली पर्वत, नहीं खानी नहीं बानी ।
चार वेद पुराण नहीं थे, आलम कोई में समानी ॥२
आप अजपा जाप नहीं जपती, नहीं अवतार निशानी ।
निराधार आधार नहीं था, जब शब्द थी कहां समानी ॥३
धुंधुकार में आप कहां थे, गुरु शिष्य की नहीं बानी ।
कहे 'निकला' आकार नहीं था, निराकार कहां रहानी ॥४

भजन राग आसावरी

ईश्वर का सुनो स्वभाव यह प्यारा ।
सत् चित् आनन्द हैं अविनाशी, सब वेसी इकसारा ॥टेक
अजन्मा अनादि केवल सर्वाधार निराकारा ।
अजर अनन्त अन्त नहीं ताको, न कोई वार न पारा॥१
सर्वेश्वर सर्व में व्यापक, नहीं आकार विकारा ।
स्वतः प्रकाश सदा परिपूर्ण, जन्म-मरण से न्यारा ॥२
अखण्ड अकाल सर्व का दृष्टा, शुद्ध ब्रह्म ततसारा ।
मुक्तस्वरूप सदा सुखरासी, जाने जाननहारा ॥३
अन्तर्यामी सबका स्वामी, सहज स्वरूप विस्तारा ।
कहे 'जीवाराम' भेद हुआ दूरा एक अरूप निज सारा॥४

भजन राग आ॰ावरी

आत्म का सुनो स्वरूप चितधारा ।
अमर अनादि आदि जुगादि, जन्म-मरण से न्यारा ॥टेक

देश काल वस्तु नहीं लागे, नहीं अवस्था धारा ।
अवस्था अतीत गुणों से आगे, निराकार निरधारा ॥१
सत् चित आनन्द सदा निर-बन्धन, माया प्रकृति बारा ।
अखंड अकाल केवल सुखरासी, काल भीत से न्यारा ॥२
नाम रूप वाणी नहीं खाणी, नहीं आकार विकारा।
धर्म अधर्म कर्म नहीं करिया, साक्षी सबका सब बारा ॥३
अलेप अभोक्ता है अकरता, कूटस्थ है तत्सारा ।
कहे 'जीवाराम' सो ही निज आतम, देश में हैं न्यारा ॥४

भजन राग आसावरी

हमने गुरु गम आतम चीना ।
आवे न जावे मरे न जन्मे, ऐसा निश्चय कीना ॥टेक
देख लिया जब सुख दुःख त्यागा, राम नाम रंग लीना ।
मेरा साहिब सब घट में बोले, तमन्त हरीजन लिख लीना ॥१
भेष फकीरी सब कोई धारे, ज्ञान फकीरी पद झीना ।
जिनके चोट लगी सतगुरु की, शीश काट धर दीना ॥२
फेरी देऊं न मांगन जाऊं, सवाल किसी से नहीं कीना ।
अजगर इधर उधर नहीं हिलता, चुन हरी ने लिख दीना ॥३
घायल होय फिरूं जग माहीं, जीयाराम गुरु कीना ।
धन्य 'सुखराम' आतम सुख दरसे, निरख परख के लीना ॥४

भजन राग आसावरी

साधो भाई हम निरगुण निराकार ।
जीवों के हेतु वपु धर आये, सगुण रूप अवतारा ॥टेक
जिन्होंने हमारा मर्म जाना, ताको किया भव पारा ।
मूर्ख जीव समझा नाहीं, कहो मर्म रहा संसारा ॥१
मूर्ख जीव स्थूल जाण कर, किया नहीं इतबारा ।
या कारण जग माहीं वृथा, समझे नहीं गंवारा ॥२

समझे कोई हंस विवेकी, जिनका किया उद्धारा।
अनुभव ज्ञान दिया हम उनको, प्रकट कुल पुकारा ॥३
निज अवतार सन्त का धरके, आवत हूं कई बारा।
कहे 'ओंकाराम' सुनो भाई साधो, हम त्रिगुण से न्यारा ॥४

भजन राग भारतीय सोरठ

जोगा रस को मारग बांको रे, जोगा रस को ॥टेक
खांडे की धार छुरी की अणियां, भक्ति सुई को नाको रे ॥१
गिरवर चढ़ता गिर मत जावो, इधर उधर कांई झांको रे ॥२
खार समुद्र में अमृत बेरी, भर भर प्याला चाखो रे ॥३
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, मूंड मुंडाया जोगी बांको रे ॥४

भजन राग गीतक छन्द

डर लागे और हांसी आवे, अजब जमाना आया रे ॥टेक
धन दौलत ले माल खजाना, वेश्या नाच नचावे रे।
मुट्ठी अन्न साधु कोई मांगे, कहे नाज नहीं आटा रे ॥१
कथा होय श्रोता सोवें, वक्ता मूंड पचाया रे।
होय जहां कहीं स्वांग तमाशा, तनिक नींद नहीं आवे रे ॥२
भंग तंबाखू सुल्फा गांजा, हुक्का खूब उड़ावे रे।
गुरु चरणों चित नेम न धारे, मदवा चाखन आवे रे ॥३
उल्टी चलन चले सब दुनिया, तासो जी घबरावे रे।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, फेर पीछे पछतावे रे ॥४

भजन राग छन्द पारवी

गम खाना चीज बड़ी है, नर देखो जरा गम खायके ॥टेक
गम खाई प्रहलाद पियारा, असुरदन्त कर लीने सारे।
खम्भ फोड़ हिरनाकुश मारे, नरसिंह रूप बनायके ॥
जिनकी छिन में विपति हरी है ॥१
गम खाई ध्रुव बालकपन में, करी तपस्या जाकर बन में।
क्षत्री डोले इकला बन में, करी तपस्या मन लायके ॥
जाकी अब तक भुजा खड़ी है ॥२

राजा जनक ने यज्ञ रचाया, देश देश का गुरु बुलाया।
राम-लक्ष्मण पीछे से आया, अपना मन [illegible] ॥
[illegible] ॥३
'सुखीराम' साधु की नावें, [illegible]।
[illegible] मुनियों में नावें, [illegible] ॥
जाकी आवागमन हरी है ॥४

भजन राग विनोदी

तुम्हारे बिना कौन बंधावे धीर ॥टेक
काशीपुर से विप्र बुलाया, लिख लिख भेजे तीर।
दोऊ पुरों को जीमन कहो है, जगत रचा है कबीर ॥१
भाई न बन्धु पल्ले हमारे, पड़ी भगत पे भीर।
बनखंड-बनखंड भटकत-भटकत, व्याकुल भयो शरीर ॥२
अपने भक्त की सुधि लई, रचो समन्दरा तीर।
आप हरी जीवण बणजारो, बादल कर दी भीर ॥३
अनन्त कड़ाई अनन्त भंडारा, अनन्त भरा जल नीर।
कहे 'कबीर' सुनो मेरे साहिब, मैं तेरो मस्त फकीर ॥४

भजन राग रामकली राग विनोदी

तुम्हारे बिना बिगड़ी ने कौन सुधारे ॥टेक
एक दिन बिगड़ी पिता पुत्र में, बांध खम्भ से मारे।
अपने भगत के कारणे, रूप नरसिंह धारे ॥१
एक दिन बिगड़ी ध्रुव भगत की, मात गोद से डारे।
ऐसी महर भई ईश्वर की, राज अचलवे डारे ॥२
एक दिन बिगड़ी राज सभा में, द्रोपदी को चीर उतारे।
खींचत-खींचत अनन्त बढ़ाओ, दुष्ट भुजा बल हारे ॥३
एक दिन बिगड़ी नरसी भगत की, सम्धोजी के द्वारे।
आप कृष्णजी भयो माहेरो, राधा रुक्मण लारे ॥४

एक दिन बिगड़ी मीरा बाई की, राणो विष दे डारे।
ऐसो मेहर भई ईश्वर की, विष अमृत कर डारे ॥५
'तुलसीदास' आस रघुवर की, हरि चरणों चित धारे।
ऐसी लीला है ईश्वर की, नारी को नर कर डारे ॥६

भजन राग मांड

कहो जी कंथे त्यारोगे, म्हारो अवगुण भरा है शरीर ।।टेक
अंका तारो बंका तारो, तारे सदन कसाई।
सुवा पढ़ावत गणिका तारी, तारी है मीराबाई ॥१
करणी-करणी सब ही कहें, करणी न आवे सार।
अपनी करणी तार उतरणी, तर गये ध्रुव प्रहलाद ॥२
करणी-करणी सब कहे, करणी से गत होय।
तेरो भरोसो जब ही आयो, बिन करणी गत होय ॥३
मन करणी के घाट पै भई राम से भेंट।
अब तो प्रभो म्हारे तरसो, लीनो 'कबीराम' टेक ॥४

दोहा

सुरत करो मेरे सांवरा, ई भव जल के मायं।
आपहि बहि जायेंगे, जो नहीं पकड़ोगे बांह॥
ईश्वर तुमसे विनती, तुम लग मेरी दौर।
जैसे कंवा जहाज ज्यूं सूझे और न ठौर॥

भजन राग केदारो

ऐजी म्हारा नटवर नागरिया, भगतां रे क्यों नहीं आयो रे ।।टेक
धना भगत की भगत पूर्वली, जिनको खेत निपजायो रे।
बीज लेर साधां ने बांटी, बिना बीज निपजायो रे ॥१
नामदेव थारो नानू लागे, ज्यांरो छपरो छायो रे।
मार मंडासो छावण लागो, लक्ष्मी बंध लगायो रे ॥२

सेन भगत थारो सुगरो लागे, ज्यांरो कारज सारी रे।
बणकर छोड़ी नाई बणगो, नृप की मोड़ संवारी रे ॥३
पुरणो खाती पुरसो हुं तो, रथा को पैड़ो घड़ी रे।
बिना बुलाया आप ही आयो, राल्यं लकड़ी काटी रे ॥४
कबीर कांई थारो काकोजी लागे, ज्यांघर बालद ल्यायोरे।
खांड खोपरा गरी छुवारा, आप लदाय आयो रे ॥५
भिलणी कांई थारी भूवाजी लागे, जिणरो झूठण खायो रे।
ऊंच नीच की शंका न मानी, रुचरुच भोग लगायो रे ॥६
कर्मा कांई थारी काकीजी लागे, जिणरो खीचड़ खायो रे।
धावलियारो पड़दो करती, रुच रुच भोग लगायो रे ॥७
मीरा कांई थारी मांवसी हुती, जिणरो बिड़दो राखियो रे।
राणा विष का प्याला भेज्या, अमृत कर डारो रे ॥८
बाल भोग को भूखो बालो, खीच खा गयो बोर रे।
ननीबाईरो माहेरो भरतो, तनै आवे जोर रे ॥९
जीमण के जीमण री तू तो, फिर सारे काम रे।
ननीबाईरो माहेरो भरतो, थारो लागे दाम रे ॥१०
कहे 'नरसी' लो सुन सांवलिया, आंणो है तो आओ रे।
क्यांई सर्गां में भूंडा लागां, थू कांई लाज गुमाओ रे ॥११

भजन

सांवरा किसोरे दिसावर नाटो ।।टेक
आगे तो तू आवतो रे वाला, अब कांई पड़ गयो घाटो ॥१
नामदेव थारी 'अंगरे छोयति, जिण से छायो टाटो ॥२
कर्मा के घर नित के जातो, खातो खीचड़ खाटो ॥३
बामण का चावल खा गयो, बिदुर के सागर बांटो ॥४
थारो जीभ चटोकड़ी रे बाला, मारे नहीं छै भाटो ॥५
बक बक कर म्हारी जीभ दुखाई, ते दलवा होय न भाटो॥६

ओ३म् नाम की तीन है धारा, ब्रह्मा विष्णु और शिव प्यारा।
जिन्होंने जगत रच दिया सारा, यूं कहते वेद और संत है॥२
सत् नाम कबीर जी ने ध्याया, जन्म-भर ... आया।
सेवा मिष्ठान्न मिठाई ल्याया, किया ... है ॥३
मीरा भजन गिरधर गोपाला, विष जहर हुआ अमृत प्याला।
सुमरण हार हुआ सर्प काला, पति ... है ॥४
सहस्र नाम सभी एकसारा, ज्यों सुमरण में एक ही तारा।
'ओंकाराम' हृदय में ही धारा, ... राम नाम निज मन्त्र है ॥५

भजन पद

राम नाम राम नाम राम नाम लीजे,
राम नाम रट रट राम रस पीजे ॥टेक
राम नाम राम नाम गुरु ते पाया,
राम नाम मेरे हृदय में आया ॥१
राम नाम राम नाम भजरे भाई,
राम नाम पटतर तुल्य न कोई ॥२
राम नाम राम नाम है अति नीका,
राम नाम सब साधन का टीका ॥३
राम नाम राम नाम अति मोहि भावे,
राम नाम निशदिन 'सुन्दर' गावे ॥४

भजन पद

सफल हो जावो रे, भजो हरि का नाम ॥टेक
प्रहलाद हरि का प्यारा, वे राम भजे इकसारा।
गिरवर से गिरता झेल्या रे ॥१
दादू हरि का प्यारा, वे राम भजो इकसारा।
[illegible] आम [illegible] ॥२

नरसीला हरि का प्यारा, वे राम भजो इकसारा।
नैनी को माहेरो ल्यायो ॥३
करमा हरि की प्यारी, वे राम भजो इकसारी।
करमा को खीचड़ खायो ॥४
'मीरा' हरि की प्यारी, वे राम भजो इकसारी।
सन्ता में हरि ने पायो रे ॥५

भजन पद

भजन बिना रहग्यो रे, पशु के समान ॥टेक
नैन दिया रे दर्शन करले कान दिया सुन ज्ञान ॥१
दांत दिया मुखदारो माहन, जीभ दई भज राम ॥२
पांव दिया रे तीर्थ करले, हाथ दिया कर दान ॥३
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, लाग्यो हरि चरणों में ध्यान ॥४

भजन पद

जिनके हिय में सियाराम बसे,
तिन और का नाम लिया न लिया ॥टेक
जिनके द्वारे श्री गंग बहे,
तिन कूप का नीर पिया न पिया ॥१
जिन मात-पिता गुरु की सेवा करी,
तिन तीरथ व्रत किया न किया ॥२
जिन सेवा टहल करी सन्तों की,
तिन योग और ध्यान किया न किया ॥३
'तुलसीदास' विचार कहे,
कपटी को मन्त्र किया न किया ॥४

भजन राग परज ताल

श्रीराम कहने का मजा जिसकी जबां पर आ गया।
वो मुक्त जीवन हो गया, चारों पदारथ पा गया ॥टेक

गोकुल कहे कठिन है मिलना, बिनबिन पड़े खाक में रिलना।
'रामबक्स' कहे दुःख नहीं मिलना, तेरी तो इस ख्वास पै ।।
क्यों वृथा भाव बताबे ।।४

भजन राग पारवी

लग गई आंख किसी कंगाल की, सोते को सुपना आया है ।।टेक
सपने में राजा भया छत्रधारी, ऊंचे महल और बनी अटारी।
हुकम लगा तब सजी असवारी, गज रथ घोड़ा पालकी ।।
बड़ा अटल राज्य पाया है ।।१
घर में रानी चन्द्रमुखी है, बेटे पोते सभी सुखी हैं।
दुश्मन मेरा सभी दुःखी है, सब राजों पै माल की ।।
बड़ी अरब खरब माया है ।।२
सपने में वर्ष हजारों बीते, घने तीन और पड़ पतोते।
दुश्मन मैंने सारे जीते, मलका मुख और पालकी ।।
सिर अटल छत्र छाया है ।।३
खुलगी आंख गई प्रभुताई, टूटो छान नजर घर आई।
'गंगादास' कहे फटीसी पाई, पगड़ी सोलह साल की ।।
शठ जाग के पछताया है ।।४

दोहा

सोये सोये क्या करे, सोये आवे निंद।
काल सिराहने यूं फिरे, जिमि तोरण आयो बिंद ।।
सोऊं सोऊं क्या करे, सोये होत अकाज।
ब्रह्मा का आसन डिगे, सुनके काल की गाज ।।

भजन राग बहर जकड़ी

भारत के बीरो करो भारत को सुधार ।।टेक
जो जो जुल्म हुये भारत में उनको दूर निकालो तुम।
भारी जुल्म फूट का देखा, इनको दूर निकालो तुम ।।

फूट से बरबादी जग में, सोच समझकर देखो तुम।
फूट पड़ी हरनाकुश अन्दर, पिता पुत्र में देखो तुम ।।
बहुत सताया पुत्र ने, नजर खोल के देखो तुम।
राम विरोधी कुटिल करोधी, सतगुण अन्दर देखो तुम ।।
कुबुध बिसारो शुद्ध बिचारो, सांची समझ बिचारो तुम।
हिलमिल चलो सभी नरनारी, दिलमें प्रेम बढ़ाओ तुम।
कौरव कंस मरे फूट में, डूब गये मझधार ।।१
छुआछूत का बुरा मामला, इनको दूर निकालो तुम।
गन्दगी को दूर हटा के, स्वच्छ बुद्धि फैलाओ तुम ।।
चोरी चुगली मिथ्याचारी, इनसे मन हटाओ तुम।
मद्य मांस का खाना छोड़ो, दया धर्म घट धारो तुम ।।
झूठ पाखंड को दूर हटाओ, सतवृत्ति बनजाओ तुम।
हिंसा अधर्म पाप को छोड़ो, परमो धर्म विचारो तुम ।।
आपसरी में मान बढ़ाओ, अभिमान को त्यागो तुम।
विद्या पढ़ो अविद्या भागे, नर तन का फल पाओ तुम ।।
मनुष्य मात्र राखो उर अन्दर सब से मिलाओ प्यार ।।२
गऊ गरीब की रक्षा कीजे, हिंदू धर्म निभाओ तुम।
साधु विप्र की सेवा करके, विद्यार्थी बनजाओ तुम ।।
छल-कपट और धोखाबाजी, इनको बुरे समझो तुम।
सट्टा-बाजी जूवाबाजी मुंडाबाजी छोड़ो तुम ।।
बदफेलों को दूर हटाओ, न्याय निगाह में राखो तुम।
हरिजन होके भजो रामको, ॐका ध्यान लगाओ तुम ।।
सज्जन बनो सभी नर-नारी, घमंड मगरूरी छोड़ो तुम।
धर्म-कर्म की सीमा सुधारो, मानुष धर्म संभालो तुम ।।
मुंहजोरी और मान-बड़ाई भारत से करदो बाहर ।।३
बैरभाव की छोड़ भावना, रार मुकद्दमा छोड़ो तुम।
वृथा खरचा करना छोड़ो, धन कमाना सीखो तुम ।।

जमराज का दूत जबर है, फांसी लेकर आसी रे।
उसके आगे जोर न चाले, पुचा पकड़ ले जासी रे ॥३
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, दुनिया कपटभरी है रे।
अब तो शरणों ले सत गुरु की, सेवाई सरसी रे ॥४

भजन राग पद

मैं तो उन सन्तन का हूं दास, जिन्होंने मन मार लिया ॥टेक
आपा मार जगत में डाले, नहीं किसी से काम।
उनमें तो कुछ अन्तर नाही, संत कहो चाहे राम ॥१
मन मारे तन बस किया, उर अन्दर भरपूर।
बाहर तो कुछ सूझत नाहीं, अन्दर झलकत नूर ॥२
प्याला पिया निज नाम का, छोड़ जगत का मोह।
ऐसा सतगुरु कीजिये, सहज ही मुक्ति होय ॥३
'भरमी' ने सतगुरु मिल्या, दिया अमीरस पाय।
एक बूंद समुद्र में मिलगी, कोई करे जस राह ॥४

भजन राग पद

मन लागा रे राम अमोला में,
खोदियो जमारो आम्बर झोला में ॥टेक
साधु सन्त की बन्दा संगत करलें, गुरुजी मेटेगा सब दुखड़ा नें ॥१
तैरनो चाहे तो बंदा आजा भजन में, गुरुजी तारेगा इन झगड़ा में ॥२
जगत जाल से बंदा अलग रहीने, हरष होजावे हरि के भजना में ॥३
कहे 'मीराबाई' गिरधर नागर, चित लाग्यो गुरु के चरणा में ॥४

दोहा

राम झरोके बैठ के, सबका मुजरा लेत।
जैसी जिनकी चाकरी, तैसा ही फल देत ॥

भजन राग पद

सुदामा जी नें देखताई, राम जी हंसे ॥टेक
फाटी पगड़िया पगा उबांणा, चलते चरण घसे ॥१

बालपने का मित्र सुदामा, अब क्यों प्रभो दूर बसे ॥२
कहां भौजाई रुक्मण महलां, या तंदुलन तीन चसे ॥३
कहां गई मेरी टूटी टपरिया, हीरा मोती जवाहर कसे ॥४
कहां गई मेरी गऊ बछिया, दरवाजा में हाथी धसे ॥५
कहे 'मीराबाई' गिरधर नागर, हम तो प्रभो शरण तेरी बसे ॥६

भजन राग पद

सुन नारद मेरा सन्तों से अन्तर नाही।
जो सन्तों से अन्तर राखे वा पर मूल सदाई ॥टेक
माया मेरी अरध शरीरी, सो सन्तों की दासी।
अड़सठ तीर्थ सन्त चरण में, करोड़ गया और काशी ॥१
सन्त जिमावे सामल जोमो, मोमे सन्त की आशा।
जहां जहां संत मेरा भजन करत है, वांहीवांही मेरा वासा ॥२
सन्त चले आगे उठ ध्याऊं, सन्त जागे मैं सोऊं ॥
जो कोई मेरा सन्त सतावे, जड़ा मूल से खोऊं ॥३
मोय भजे भजूं मैं उनको, सो मेरे मन भावे।
कहत 'कबीर' संत की महिमा, आप हरी मुख गावे ॥४

भजन राग पद

धर्मराय आदर करें, कोई म्हारे संत पधारे।
वा का तो दर्शन करूं, वहो म्हारो जनम सुधारे ॥टेक
अच्छा करूं बिछावणा, चित चरणों में ल्याऊं।
देवण लायक कुछ नहीं, अपना शीश नवाऊं ॥१
विध-विध से सेवा करूं, अरु पकवान बनाऊं।
कंचन थाल परोस के, अपने हाथ जिमाऊं ॥२
ज्यां घट नौबत नाम की, सो घट खाली नाई।
आठ पहर लाग्या रहे, गुरु चरणों के माहीं ॥३
थाह नहीं दरियाव की, भर ल्याऊं जल झारी।
'सूरदास' की बिनती, उतरे भव पारी ॥४

भक्तों पर करते प्यार सदा, शिशु सेवक सुन्दरलाल सदा।
मेरा भी गुरु ध्यान रहे, ओंकार हरे ओंकार हरे ॥४

भजन पूर्वोक्त (चार)

यह ओ३म् अक्षर परब्रह्म सदा, सब नामों का सितारा है।
ओंकार बिना सिद्ध होत नहीं, जप योग यज्ञ आचार है ॥टेक
यह सकल काम सिद्ध-दाता, प्रभु ने निज नाम निकारा है।
ओंकार से निकले मन्त्र सभी, गायत्री आदि सारा है ॥१
धर्म विचार चतुर्दश है जग में, सब ओंकार बिस्तारा है।
वर्ण-मंत्र सभी ओ३म् से निकले, ओ३म् करके होत उच्चारा है ॥२
ओंकार सकल घट व्यापक है, सब नाम रूप आधारा है।
इन्हें जान भजे मनमाहि मुनि, तिन्हें प्राणोंसे अति प्यारा है ॥३
ओ३म् मंत्र का है अधिकार उसे, जिसने ब्रह्मचर्य धारा है।
'अचलराम' तभी कल्याण होवे, ये वेद वेदांत पुकारा है ॥४

भजन राग पूर्वोक्त चार

धिक है जग में जीना तिनका, जिन राम का नाम बिसारा है।
जिन नाम प्रताप शिला तर गई, तिस नाम को नाहि संभारा है ॥टेक
जे रामनाम कपि भालु तरे, पशु योनि जिन्होंने धारा है।
नर जन्म पाय बिसराय राम, जिन्हें धिक् बारम्बारा है ॥१
नल नील गीध वायस पक्षी, भज राम नाम हुये पारा है।
देवों दुर्लभ तन पाय भूले, तिनका जग धूल जमारा है ॥२
महापापी चाण्डाल तिरे कई राम नाम का पकड़ सहारा है।
जो होय कुलीन नहीं राम भजे, उस जैसा कौन गंवारा है ॥३
यह पतित पावन नाम जग में, इस नाम से अधम उधारा है।
'अचलराम' तारक मंत्र है यह, इस नाम की महिमा अपारा है ॥४

भजन राग पूर्वोक्त चार गजल कव्वाली

धन्य है जग में जीना तिनका, निज तत्व जिन्होंने जाना है।
पंचकोश अतीत निज आत्मा को, सत् चेतन रूप पिछाना है ॥टेक

इस जग में पंथ अनेक चले, मत भेद जिन्हों का नाना है।
मतहठी झगड़ों में जीव फंसे, सब अपनी अपनी गाना है ॥१
सच्चिदानन्द ही जीव यह, सब ब्रह्म के हंस कहाना है।
निज स्वरूप भूल अविद्या में पड़े, पंच कोशों बीच उलझाना है ॥२
बिन स्वरूप ज्ञान नहीं भर्म मिटे, नहीं छूटे आना जाना है।
जिसने निज तत्व जान लिया, तिसका सब भर्म बिलाना है ॥३
वह जीवन मुक्त विचरे जग में, पंच कोशों पर ठहराना है।
'अचलराम' है जीवन मुक्त सदा, जीतेजी ब्रह्म समाना है ॥४

भजन राग गजल कव्वाली

जय राम हरे सुख धाम हरे, भगवान् हरे भगवान् हरे।
जय जय प्रभो दीनानाथ हरे, भगवान् हरे भगवान हरे ॥टेक
तुमने ध्रुव को दर्शन दीना, अरु गजराज बचा लीना।
भक्तों का संकट टार दिया, भगवान् हरे भगवान हरे ॥१
जब भक्त प्रह्लाद को सताया था, तब नरसिंह रूप दिखाया था।
दुष्टों का तुमने नाश किया, भगवान् हरे भगवान् हरे ॥२
तुम पतित पावन बनवारी, कृपा करो हे त्रिपुरारी।
मुझको प्रभो दर्शन आन दिये, भगवान् हरे भगवान हरे ॥३
प्रभो बहुत से पापी तारे हैं, 'सुन्दर' कहि शरण तुम्हारी हैं।
क्यों मुझसे नेह बिसार दिया, भगवान् हरे भगवान् हरे ॥४

भजन राग धमाल ताल

बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है ॥टेक
हमारी मात की करनी, सकल दुनिया से न्यारी है।
विमुख जिन राम से कीना, ऐसी जननी हमारी है ॥१
लगी रघुवंश में अग्नी, अवध सारी उजारी है।
भरत सिर लोट धरनी पर, यही करता पुकारी है ॥२
सुना जब तात का मरना, मानो बरछी सी मारी है।
पड़ा व्याकुल हुआ बेसुध, दृगों से नीर जारी है ॥३

जगं में ध्यान सुरता का, मुझे तृष्णा की मारी है।
वह रघुनाथ के पावन, यही 'तुलसी' पुकारी है ॥४

दोहा

राधा कृष्ण सब कहें, आक ढाक और कैर।
तुलसी या ब्रज में है क्या, राम नाम से बैर॥

भजन राग परज ताल

दिल तो मेरा हर लिया, गोविन्द माधव श्याम ने।
कृष्णा कृष्णा मैं पुकारूं, तेरे दर के सामने ॥टेक
बंसी वाले अपनी बंसी, तू सुनादे आन कर।
तेरी चरचा हम करेंगे, हर बशर के सामने ॥१
खम्ब से प्रह्लाद को, तुमने बचाया था प्रभो।
द्रोपदी की लाज राखी, कौरव दल के सामने ॥२
मेरी ख्वाहिश है फकत, मोहन तेरे दीदार की।
इस लिये धूनी रमाई, तेरे दर के सामने ॥३
कृष्ण दर्शन अब दिखा दे, 'सुन्दर' को आन कर।
हम तुम्हारे सामने हों, तुम हमारे सामने ॥४

भजन राग पद

बड़े प्यार से भजना प्यारे भगत वत्सल भगवान् रे।
क्या जाने किस वेश में, श्यामा मिल जावे अनजान रे ॥टेक
सुख दुःख हो जीवन के संगी, कर्मों की बेड़ी है जंगी।
मोह ममता के चक्कर से तू, करले अब कल्यान रे ॥१
तप नेह धर्म में राखो श्रद्धा, पाप कर्म से मुंह मोड़ ले बंदा।
श्याम भजन में रखना मनवा, छोड़ सभी अभिमान रे ॥२
संग तेरे कोई न आवे, कर लेगा सो फल पावे।
घोर नींद में क्या तू सोवे, मनवा है किसका मेहमान रे ॥३
जग जंजाल ने घेरा डाला, मूर्ख मन मत फिर मतवाला।
लालच की पट्टी से आंखों, बांध रहा अज्ञान रे ॥४
पंचकोश अतीत निज आत्मा को, सत् चेतन रूप पिछाना है ॥टेक

'राधेश्याम' का कहना मानो, साथ अहिंसा को उर आनो।
तब ही आवेंगे श्याम बिहारी, दुखियों के दरम्यान रे ॥५

भजन राग पूर्वोक्त चाल

र्बल के प्राण पुकार रहे, जगदीश हरे, जगदीश हरे।
श्वासों के स्वर झनकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥टेक
काश हिमालय सागर में, पृथ्वी पाताल चराचर में।
ह मधुर बोल गुन्जार रहे, जगदीश हरे, जगदीश हरे ॥१
ब दया दृष्टि हो जाती है, जलती खेती हरियाली है।
स आस में जन उच्चार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥२
ब दुःखों की चिन्ता कोई नहीं, भय है विश्वास न जाय कहीं।
टे न लगा यह तार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥३
म हो करुणा के धाम सदा, सेवक है 'राधेश्याम' सदा।
स इतना सदा विचार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥४

भजन राग पद

जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा।
माता तेरी पार्वती पिता महादेवा ॥जै०
एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी।
मस्तक पर सिंदूर सोहे मूसे की सवारी ॥१
अन्धन को आंख देत कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया ॥२
मोदक को भोग लगे सन्त करे सेवा।
हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा ॥३
दीनन की लाज राखो, शम्भु पुत्र वारी ॥
मनोरथ को पूरा करो, जायें बलिहारी ॥४

दोहा

तीर्थ नहाये एक फल, सन्त मिले फल चार।
सत्गुरु मिले अनेक फल, कहे कबीर विचार॥

भजन राग धुन कव्वाली

चेत है तो चेत प्राणी, यह अवसर भी जा रहा है ॥टेक
गर्भकाल में वचन भजन का, वह भी वचन बिसारा है।
हरि से आज्ञा मांग भजन की, पीछे बाहर आया है ॥१
तन सुन्दर वो बालकपन में, माता प्यार सवाया है।
बड़ा भया तब आई जवानी, कर्मों में लिपटाया है ॥२
तीन अवस्था गई बिरानी, हरि से ध्यान लगाया है।
पूंजी थी सो सारी खोदी, फिर मूर्ख पछताया है ॥३
झूठी जग की माया कहिये, झूठा जाल पसारा है।
यह माया निरंजन की कहिये, मेरा मन बहकाया है ॥४
मदुराम जी सतगुरु दाता, हमको आन चिताया है।
'जीवनराम' सदा मतवाला, छन्द बनाकर गाया है ॥५

भजन राग मंगल ताल प्रभाती

जाग जाग नर चेत बन्दा, क्या सोवे नर चेत रे ॥टेक
जागत है तो ऐसा जागो, ज्यूं ध्रुवजी प्रहलाद रे।
ध्रुव नें मिलगी अचल पदवी प्रह्लादा नें राज रे ॥१
के जागे कोई रोगी भोगी के जागे कोई चोर रे।
के जागे कोई सन्त पियारा, ज्याकी लगी राम से डोर रे ॥२
तन की सराय में मन है मुसाफिर दो दिन का विश्राम रे।
तन का चोला होय पुराना, लगे यमों का दाव रे ॥३
राम भजे सो हंस कहावे, कुबुधि क्रोध नें त्याग रे।
रामानन्दा का बने 'कबीरा' उठ भजो प्रभात रे ॥४

भजन राग प्रभाती

जाग सखी अब हुवा सवेरा, तेरे घर प्रभो आयारी ॥टेक
काशी ढूंढो मथुरा ढूंढी, वृन्दावन सब सारा जी।
जिसके कारण फिरी भटकती, सो तेरे घर आया री ॥१

कैलाश से शम्भु आया संग में नादी ल्याया री।
पारवती उमा के संग बिराजे, भैरों नाद बजाया री ॥२
ब्रह्मपुरी से ब्रह्मा आये, संग सावित्री ल्याया री।
चारों वेद द्वारे ठाड़े, अनहद बीन सुनाया री ॥३
राम आये लक्ष्मण आया, संग में सीता ल्याया री।
हनुमत जैसा पायेला संग में, दर्शन भला सवाया री ॥४
उषा भान भया उजियाला, रवि ने किरण पसारी री ॥५
'सूरदास' प्रभाती गावे, हरि चरणों चितधारा री ॥६

भजन राग भियाणा

जागो-जागो श्री गुरुदेव, सूरज राजा उदित भयो।
तेरे द्वारे खड़े सब दास, दर्श बिना तरसे जीयो ॥टेक
अब रात गई सब बीत, सवेरो भोर भयो।
इत चांद गयो है अस्त, तारों का तेज गयो ॥१
जागे वन पक्षी और मोर, पपैया ने शोर कियो।
जागे जगके सब नरनार, संपत सुत को दान कियो ॥२
बिन दर्शन दु:खी प्राणी, विरह ने जोर कियो।
दो दर्शन दीनानाथ, तृष्णा रह्यो बहुत हियो ॥३
मेटो भर्म विकार अन्धकार, कष्ट मैंने बहुत सह्यो।
'जीवादास' चरण के पास, हमारो शुद्ध भयो ॥४

भजन राग भियाणा

अब जागे श्री गुरुदेव, आनन्द सब घट में भयो।
कर दर्शन नर-नार, चरण में शीश दियो ॥टेक
भागे भ्रम विकार अन्धकार, पाप सब प्रलय गयो।
अब खुल गया मुक्ति द्वार, कष्ट सब दूर भयो ॥१
कई जनम को पुण्य प्रकट, सखी आज भयो।
छूटे जनम-मरण भय दूर, अभय गुरुदेव कियो ॥२

अब ही बारम्बार अपार, सतगुरु योग बणो।
घट ज्ञान कला छिटकाय, सूरज प्रकाश भयो ॥३
तम रजनी भई नष्ट, चेतन शुद्ध स्वरूप थयो।
'ओंकारदास' मिटी यमत्रास, अमर पद गुरुदेव दियो ॥४

भजन राग खम्मास

अब तो समझ सुहागिन सुरता नार,
लगन दीनानाथ से लागी ॥टेक
लगनी लहणो पहर सखीरी, बीती जाय बहार।
धन जोबण है पावणा री, आवे न दूजी बार ॥१
राम-नाम को चूड़लो पहरो, प्रेम की सुरमो सार।
नक बेसर हरिनाम को री, उतर चलोगे पार ॥२
मैं जाणी हरि मैं ठग्या री, हरि ठग ले गया मोय।
लख चौरासी का मोरछारो, क्षण में राल्या खोय ॥३
ऐसे वर को क्यों वरे री, जो जनमे मर जाय।
वर वरिये एक सांवरो री, अमर चुड़ो हो जाय ॥४
सुरत चली जहां मैं चली री, कृष्ण नाम झणकार।
अविनाशी की पोल में री 'मीरां' करे है पुकार ॥५

भजन राग पद

तेरे ताई जरा भेद दर्शाया, तेरे ताई जरा भेद दर्शाया ॥टेक
कितना स्वांस पवन पृथ्वी का, कितना नीर नवाया।
कितना स्वांस घट भीतर बोले, कितना अग्नि तपाया ॥१
खेचरी भूचरी अगम अगोचर, उनमुन नसा चढ़ाया।
पांच भेद अनुभव का कहिये, किसकी बैठों छाया ॥२
पांच पेड़ अनुभव का कै, सत गुरु मोय सिखाया।
धरन गगन असमान बीचमें, निर्भय छप्पर छाया ॥३
अनुभव ज्ञान बांच कर बैठे, अमर पट्टा लिखवाया।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, सुन बिच बास बसाया ॥४

भजन राग लम्बी पद

ऐसा ऐसा ज्ञान विचारो बड़ा ज्ञानी,
वेद किताब क्या से गम न्यारी ॥टेक
चारों खाणी चारों बाणी, एकण बीज रची जो सारी।
जल थल बीच असंख जुग रचिया, धन मालिक कुदरत थारी ॥१
तीन नारी है, बेअंना बिना पुरुष सेजा न्यारी।
तीनों नारी अंकन कंवारी बालो जायो एक ब्रह्मचारी ॥२
उन बाला के रूप ने रेखा रंड मुण्ड बालो अवतारी।
उन बाला की खबर बरता ने असंख जुगारो बालो होतारी ॥३
उन बाला से इतना जुग रचिया आदि अन्त जुग चारी।
बिना पांव एक गढ़ी चलता नौ खण्ड में बालो फिरता री ॥४
सौवनी शिकरमें कुटिया बनाई उन कुटिया में बालो तपतारी।
घंटा शंख पखावज बाजे बिन श्रवण सुण तार रंकारी ॥५
गुरु विशम्भर कृपा कीनी, मैं हूं शिष्य थारो प्रण धारी।
दो कर जोड़ 'भजन गिर' बोल्या, सुरत मोरछं जाय ठहरी ॥६

भजन राग लम्बो पद

सत गुरु दाता खरा विधाता तुम संग धुन लागी मेरी।
लग रहो धुन शून्य में गहरी, चारों धाम किये एकसेरी ॥
कट गया कर्म भर्म सब तनका, निर्भय लेलो मौज भारी ॥टेक
सब जग रोगी कोई न निरोगी, कहो किसे लागे कारी।
सतगुरु मेरा सच्चा वेदजी, नाड़ी देखी तन की सारी ॥१
शब्द जड़ी मरहम मशाला, प्रेम बूंद ओषध डारी।
सतगुरु प्याला प्याया दर्द का, देह करदी कञ्चन सारी ॥२
नौ सौ नदियां बहे घट भीतर, काया में दौड़ करे भारी।
तलेका मोर शिखर जाय लाग्या इड़ा पिंगलाको छवि न्यारी ॥३
गुरु विशम्भर कृपा कीनी, मैं हूं शिष्य थारो प्रणधारी।
दो कर जोड़ 'भजनगिरी' बोला, साधु संगत ताई देहधारी ॥४